माह अप्रैल 2021 से जून 2021 वर्ष 7 अंक 2 मुल्य 30

साहित्य सरोज

RNI No- UPHIN/2017/74520

साहित्यिक पत्रिका

संस्मरण विशेषांक

साहित्य सरोज

एक सम्पूर्ण साहित्यिक पत्रिका

वर्ष-7 अंक -2

RNI No- UPHIN/2017/74520

माह अप्रैल 2021 से जून 2021

संस्थापिका -: स्व०श्रीमती सरोज सिंह

संरक्षक -: श्रीमती कान्ति शुक्ला ''उर्मि'' भोपाल

प्रकाशक -: अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''

संपादक -: डा० कमलेश द्विवेदी, दशरपुरवा कानपुर

प्रधान कार्यालय -:

मेन रोड,गहमर, गाजीपुर

मो० 9451647845

ईमेल sarojsahitya55@gmail.com

बेवसाइट-: https://www.sarojsahitya.page/

मोबाइल अप्लीकेशन प्ले स्टोर- साहित्य सरोज

प्रति अंक -३०रूपये मात्र, चार वर्ष शुक्ल -: ५०० रूपये मात्र, आजीवन ५००० रूपये मात्र

स्वत्वाधिकारी,मुद्रक, प्रकाशक अखंड प्रताप सिंह, रधुवर सिंह का कटरा, मेन रोड, ग्राम व पोस्ट गहमर, तहसील जमानियाँ, जनपद गाजीपुर, उ०प्र० पिन २३२३२७ द्वारा पंकज प्रकाशन आमघाट,गाजीपुर से मुद्रित एवं अखण्ड प्रताप सिंह द्वारा प्रकाशित।

पत्रिका में छपे लेख,कहानीयॉ एवं अन्य विषयक सामाग्री लेखक के अपने विचार है, इनका किसी व्यक्ति या स्थान से मिलना संयोग मात्र है। किसी विवाद का निपटारा गाजीपुर न्यायालय में होगा।

तकनीकि पक्ष-: कम्पोजिंग, डिजाइनिंग, कवर डिजाइनिंग अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''
प्रिटिंग पंकज प्रकाशन आमघाट गाजीपुर
चित्र -गूगल ईमेज द्वारा।

साहित्य सरोज के पाठक सदस्य बने और मोबाइल अपल्किेशन का प्रयोग कर सीधे साहित्य सरोज एवं साहित्यकारो की दुनिया में रचना भेजें।

साहित्य सारोज की स्ंथापिका श्रीमती सरोज सिंह की प्रथम पुण्य तिथि 02 अप्रैल को मनावे विश्व जननी हरियाली दिवस के रूप में करें एक पौधा मॉं का समर्पित!

अखंड गहमरी

आपके नाम

साहित्य सरोज पत्रिका के चतुर्थ वर्ष का द्वितीय अंक आप सभी के हाथों में पहुँच चुका है। विगत वर्ष से अभी तक हम कोरोना महामारी के कारण बंद हुए बाजार व्यवस्था से उभर नहीं पाये हैं। कोरोना के द्वितीय लहर का प्रकोप भी धीरे-धीरे बढ़ रहा है।ऐसे में हमारा सुरक्षित रहना ही सर्वोपरि है।

कोराना काल के प्रथम लहर से लेकर आज तक साहित्य सरोज पत्रिका के यह प्रयास किया है कि आप घर में सुरक्षित रहते हुए भी न सिर्फ अपने विचारों को एक दूसरे तक पहुँचाने में सफल रहे बल्कि आप की मनोदशा भी उच्च स्तर पर रहे।

साहित्य सरोज की संस्थापिका श्रीमती सरोज सिंह के चतुर्थ पुण्य तिथि ०२ अप्रैल के कार्यक्रम में आपने जिस प्रकार बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया वह आपके प्रत्रिका प्रेम का सर्वोच्च उदाहरण था। पत्रिका ने उसी दिन यह निर्णय किया था कि पत्रिका सिर्फ आपके लेखन ही नहीं वरण आपके सर्वर्गिण विकास हेतु भी कार्य करेगी और आपको समाज में एक मुकाम हासिल करने में मदद करेगी।

साहित्य सरोज पत्रिका वर्ष २०२१ -२२ को महिला उत्थान वर्ष के रूप में मना रही है हमें पूर्ण विश्वास है कि हम अपने इस उद्वेश्य में भी आपके सहयोग से सफल होगें।

अतः में आप से यही निवेदन करना चाहूँगा कि कोरोना के द्वितीय से आप अपने आपको बचायें और यथासंभव दूसरो की भी मदद करें। और पत्रिका के लिए लेखन सामाग्री जरूरी भेजें।

डॉ कमलेश द्विवेदी
संपादक
साहित्य सरोज

इस अंक में

संस्मरण	चाय	डा सरला	04
गीत	वह लड़की	विजय पुरी	05
कविता	ये दिल	ममता	05
लघुकथा	सेन्टर अट्रैक्शन	मीना अरोड़ा	06
लघुकथा	लेख में व्यंग्य	मीना अरोड़ा	06
लेख	हर हर गंगे	संतोष शान	07
लघुकथा	महामारी	होशियार यादव	08
लघुकथा	बेटी की कलम	वंदना पुणतांबेकर	09
संस्मरण	कावेरी	उषा सोमानी	10
लघुकथा	मुग्धा	प्रीति चौधरी	11
कवर स्टोरी	बेदर्द हाहिक	साहित्य सरोज	12
कविता	दृष्टिगोचार	हितेन्द्र	14
ग़ज़ल	गज़ल	राघवेन्द्र	14
लेख	हमारा नजरिया	रोहित मिश्रा	15
कविता	मेरे यार की	नेहा शर्मा	16
कहानी	गाँव की गलियां	हेमलता गोलछा	17
संस्मरण	उठ जा बेटा	सीमा सिंह	19
संस्मरण	माँ	ममता	20
राजाकांता	**का पन्ना**		**21**
संस्मरण	भूल नहीं पाता	विवेक रंजन श्रीवास्तव	22
संस्मरण	बेटा तुम्हें मेरी	किशोर श्रीवास्तव	23
संस्मरण	कैसे भूला दूँ	ममता गिनोड़िया	24
कविता	छुपी रूस्तम हो	सविता	25
गीत	तुम बिन	आशुतोष	25
ग़ज़ल		रामपुकार	26
लेख	पहले जैसा	शिल्पा अरोड़ा	26
कविता	परिंदा	वी अरूणा	27
लेख	जिंदादिली	पूनम झा कोटा	27
कविता	मुद्दे	डॉ ज्योति मिश्रा	28
लेख	संघर्ष के बाद	निर्मल	29
अलका का	**पन्ना**		**31**
कविता	खोन का डर	सुनीता सुनु	32
कविता	सूरज जी आये	सुरेन्द्र दत्त	33
कविता	पहली कविता	रचना पंचपाल	33
कविता	रामबाण	रामकुमार चतुर्वेदी	34
कविता	ठोकर	निरूपमा	34
कहानी	बटंवारा	विजेन्द्र	35

संस्मरण

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

चाय

हम लोग चार परिवार मिलकर दार्जिलिंग घूमने गये हुए थे । दार्जिलिंग की पहाड़ियों को जब पहली बार देखा तो ऐसा लगा की इसपर भला लोग कैसे रहते होंगे ? पर यह क्या जैसे जैसे जीप आगे बढ़ती रास्ते नजर आने लगते । रास्ते में छोटी छोटी दुकानें भी होतीं जो लकड़ी की बल्लियों के सहारे टिकाकर बनायी गयीं थीं। उनमें चाय पीकर हम फिर आगे चल देते ।

दुकानों पर कोई ताला नहीं लगा होता था पूछने पर पता चला की वहाँ कभी चोरी नहीं होती ,हाँ कभी कभी बाहरी लोग जरूर कुछ सामान उठा लेते हैं पर ऐसा बहुत ही कम होता है । वे लोग दुकान का कूड़ा भी दुकान के सामने रखे कूड़ेदान में ही डालते थे । कौतूहल वश मेरी सहेली ने एक महिला से पूछ ही लिया " आप तो अपना कूड़ा दुकान के पीछे गहरे खाई में फेंक सकती हैं ,वहाँ कौन देखेगा ।"

मैम जी बस कहने का है ,पकड़े जाने पर दो हजार का जुर्माना है । वह कौन भरेगा ? हमें अब बात समझ आ गयी थी की आखिर वे लोग कूड़ेदान में ही कूड़ा क्यों फेंकते है ।फिर होटल भी आ गया जहाँ हमें ठहरना था । सभी बहुत खुश थे तथा नयी जगह, नये परिवेश तथा नये लोगों के बीच हम एक नवीन मानसिक बोध से लिप्त हो रहे थे ।नयी जगह में नये नये लोगो के बीच बहुत ही सुन्दर अनुभव जुड़ रहे थे । उन लोगों के बीच कई बार स्वयं में ही बहुत सी कमियाँ नजर आतीं तो उन लोगों में एक आदर्श तथा ग्रहण करने लायक बहुत सी चीजें दृष्टिगत होतीं थीं ।

एक दिन हम लोग घूमकर होटल आये तो उस दिन मेरे सिर में बहुत ही तेज दर्द हो रहा था ।दर्द की दवा लेने के बाद भी दर्द बना हुआ था । खाना खाने के समय हम लोग नीचे के हाल में आये । सभी ने खाना खाया पर सिरदर्द के कारण मुझसे कुछ भी नहीं खाया गया । मैने अपने साथ बैठी सहेली से कहा,"चाय मिल जाती तो कुछ आराम मिल जाता ।"

" चाय! यह कोई चाय का समय है जो चाय मिलेगी ,वह भी इतनी रात को ।"वह हँसते हुए बोली ।तभी खाना परोस रहे एक वेटर ने पूछा ,"क्या बात है मैम ?" "अरे कुछ नहीं ,क्या चाय की व्यवस्था हो सकती है ?"

" नहीं मैम अब इस समय चाय कहाँ ? सामान भी नहीं है ,क्या हुआ ? वह परेशान सा हो उठा।

"अरे इनके सिर में दर्द है इसलिए ,कोई बात नहीं।"

"नहीं मैम मैं कुछ तो करेगा ,आप अपने रुम मे पहुँचो मैं कुछ तो व्यवस्था करता ।"दूसरे वेटर ने जवाब दिया ।

हम लोग सभी अपने अपने कमरों में चले गये । मेरी सहेली और उनके पतिदेव हमारे ही कमरे में बैठ गये। हम लोग आपस में यही बात कर रहे थे की देखो इन लोगों में कितनी इंसानियत है , नहीं तो उसे क्या पड़ी थी चाय बनाने की । तभी दूसरे सर बोल पड़े ,अरे ऐसे ही कोई चाय वाय न लाने का ,देख लेना । वह भी इतनी रात गये दिन होता तो कोई बात भी थी ।

अभी हमलोगों में यही सब बातें हो ही रही थीं की दरवाजे पर ठक ठक की आवाज़ हुई । दरवाजा खोलने पर वही वेटर सामने खड़ा था । उसके हाथ में केतली और गिलास था ।

"मैडम देरी तो नहीं हुई मैं कहीं और से चाय बनवाकर ला रहा हूँ । केतली और गिलास मुझे ही दीजिएगा ,किसी और की है । मैं आवाक उसका चेहरा देख रही थी ,आखिर यह मेरा लगता ही कौन है ? पर मेरे लिए चाय बनवाने के लिए उसने कितनी परेशानियों का सामना किया । इसके पैसे कहने का साहस मुझमें नहीं था।

डा.सरला सिंह "स्निग्धा"

दिल्ली

कविताएं

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

वह गोरी

लड़की वह गोरी होय, भरी हुई तिजोरी होए।
पढ़ी भरपूर होए भई, हो जैसे कोई नायिका।।
रहे मुझको निहारती, पपीहे सी पुकारती।
हो जाऊं मैं शरारती, बन भँवरा कली का।।
तिरछे से नैन हों, मीठे मीठे बैन हों।
दिन हो कि रैन हो, मेरी बने वही राधिका।।

रूप रंग खरा हो, यौवन अंग भरा हो।
मिलावट न जरा हो, मेरा बिगड़े ज़ायका।।
रुत भी सुहानी हो, वह मेरी प्रेम दीवानी हो।
कोई उसका न सानी हो, ऐसी मेरी साधिका।।

रंग है उमंग है, उठी मन में तरंग है।
भीगा भीगा अंग है, मौका जो है होली का।।
धूम हो धमाल हो, हाथों में गोरे गाल हों।
थाल में गुलाल हो और फूलों की हो वाटिका।
मुख में मिठास हो, सुख का उजास हो।
फगुनाई मधुमास हो तो खिले फूल दिल का।।

नाचने में चपला हो, सेहत से सबला हो।
पति रूप तबला हो मौका हो रियाज़ का।।
दाएँ बाएं तकधिना धिन तकधिन तकधिन ।
संगत में सास हो तो बचे क्या जमाई का।।

उससे ही शादी हो, घर में आबादी हो।
बेटे चाहे बारह हों, पर पैदा न हो बालिका।।
चंड प्रचण्ड लिंग भेद पर दण्ड दे वह।
तोड़ दे घमण्ड मेरा, रूप धर काली का।।

डॉ विजय कुमार पुरी
ग्राम पदरा पोस्ट हंगलोह
तहसील पालमपुर जिला कांगड़ा
हिमाचल प्रदेश 176059
मोबाइल 7018516119

ये दिल ना होता!

कमबख्त ये दिल ना होता तो दरारों का मलाल ना होता
कांच सा बिखरना,बटोरना,चुभना,भी महसूस नहीं होता

दिल के पास कुछ खास लोग,खास एहसास ही रहते हैं
मजबूत रिश्ते भी गलतफहमी से कभी दूर चले जाते हैं

दिल की समस्त भावनाओं का सृजन,जनक है यह दिल
जिंदा इंसान में धड़कता मचलता बहकता है यह दिल

दिल की जुबान,भाषा नहीं ,मौन,मूक बातें करता है दिल
अपनों के अपनेपन में जीता मरता ,खुश रहता है दिल

दिल से प्रेम करना,प्रेम बांटना,सबसे बड़ा है प्रेम उपहार
दिल से किसी का प्रेम पाना स्वयं के लिए मान सम्मान

पेड़ के पत्तों जैसा बिछड़ा तो फिर बिखर जाता है दिल
प्रकृति जैसा हरियाली बिन रुखा सूखा हो जाता है दिल

दुनिया रूठे,जग छूटे,दिल ना टूटे,हरदम साथ साथ रहें
दिल के लिए पूरी दुनिया हम,प्रेम प्रीत से नवस्वप्न रचें

स्थाई खुशी के लिए विश्वास से दिल से असीम प्रेम करो
कमबख्त दिल है बच्चा,मासूम,निश्छल अपार प्यार करो

ममता तिवारी
इंदौर

लघुकथाएं

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

सेन्टर अट्रैक्शन

"**भाई**, मुझे भी सेन्टर आफ अट्रैक्शन की कला सिखा दो"
"क्यों, तुम्हें क्या करना है इस कला का?"
"तुम्हारे कहने का अभिप्राय है हम नाचीज़ लोगों को कलाएं सीखने का हक नह है?"
"बिल्कुल हक है, तो चलो फिर इस कला की कुछ शर्तें गांठ बांध लो---
1-हर पोस्ट पर टिप्पणी मत दिया करो।
2-बंदर की भांति सबसे पहले आ कर पोस्ट पर उछल कूद मत किया करो।
3-टिप्पणी इतनी लंबी लिखा करो कि एक लेख तैयार हो जाए।"
"पर भाई लंबी क्यों? हमें लेख का भावार्थ थोड़े ही करना होता है।"
"कर दी ना, नादानों वाली बात, अरे भाई दूसरों के भले से पहले अपना भला सोचो।मुझे लगता है तुम्हारे बस की नही यह कला सीखना।अब आखिरी टिप नही दूंगा"
"प्लीज,भाई अब नहीं बोलूंगा,बता दो"
"ठीक है, आखिरी टिप यह है कि आखिर तक चुप्पी साधे रहो।"
"पर भाई आखिर तक क्यों? आखिर को सेंटर अट्रैक्शन कैसे माना जायेगा?"
"अरे बावरे, सबसे अलग और अंत में जो दिखे वो सेंटर अट्रैक्शन होता है, समझा कुछ।"
"जी,भाई जी ,समझ गया।अब कल देखना नमूना।"
"किसका?"
"मेरे सेन्टर अट्रैक्शन बनने का "

लेख में व्यंग्य

"**सुनो** भाई,आज के लेख में व्यंग्य नहीं है।"
"चुप कर जा, ईश्वर देखा है"
"नही "
"महसूस किया है !"
"हां"
"कैसे?"
"सबके कहने पर"
",सही है, जैसे- गुनीजनो ने ईश्वर को खोज निकाला और तुमने भी महसूस किया। बस तुम्हें इसे भी महसूस करना है। यदि नहीं करोगे तो मूर्ख साबित हो जाओगे।"
"भाई,ईश्वर का इसका क्या लेना देना?"
देना लेना तो है जो दोगे वही लोगे (मतलब तारीफ करोगे तो मिलेगी)
अरे बावरे, जैसे ईश्वर दिखाने से दिखता है वैसे ही व्यंग्य भी दूसरों के बताने से महसूस होने लगता है। महान विभूतियों ने बकवास लेख में व्यंग्य खोज निकाला है, तुम भी उस व्यंग्य को महसूस करो।"
"हम्म"
"हम्म नही चलो...एक बार फिर से पढ़ कर बताओ?
"अरे हां!....... है!"
"क्या?"
"व्यंग्य"
"लो हो गये ना..... तुम भी..... महान। तथास्तु।।"

मीना अरोड़ा
हल्द्वानी

लेख

हर हर गंगे

हम उस देश के वासी हैं जिस देश में गंगा बहती है। कितना गर्व महसूस करते हैं हम ये बात कहने में। क्या उतना परवाह और कदर भी करते हैं गंगा की ?

एक तरफ तो आस्था और विश्वास के साथ गंगा को हम माँ कहते हैं और दूसरी तरफ भौतिक विकास के नाम पर उसी विकास से निकलने वाली सारी गंदगी को उढ़ेल देते हैं उसी माँ के उपर फिर चिल्लाते हैं कि "गंगा बचाओ", "गंगा स्वछता अभियान चलाओ आदि"। मंथन करने योग्य बात यह है कि गंगा के देश में रहने वाले इन्हें ढ़केल-ढ़केल कर अपनी इच्छा पुर्ति के लिए सिमटा कर छोटी करने वाले हम, इनकी गोदको गंदा करने वाले हम तो बंधुओं बचाएगा कौन?

क्या यह सत्य नहीं है कि हम ही अपने भवन निमार्ण के लिए गंगा किनारे के पुण्य लाभों का प्रलोभन दे-ले कर यहाँ अपना निवास बनाने को उतावले रहते हैं? लेकिन निवास बनवाते समय इस बात का बोध रहता भी है कि निवास बनवाएंगे तो गंदगी भी हम ही फैलाएंगे? यदि नही तो इस बात का कोई उत्तर है किसी के पास के वहाँ बने घरों के कूड़े , टॉयलेट की गंदगी, स्नान घर की गंदगी को उठा कर डालने दस - बीस किलोमीटर दूर जाएंगे? नहीं ना और तो और उनके तटों से सटे वन संपदाओं को पिकनिक एवं हनीमून के बहाने अपनी मौज मस्ती के लिए प्लास्टिक आदि के कूड़ा करकट बिखेर कर प्रदुषित भी हम ही करेंगे फिर जब को विशेष दिवस या अभियान आएगा तो शामिल हो कर गला भी हम ही फाड़ेंगें।

अतः क्षमा चाहते हुए हम हम ही से कहना चाहेंगे कि यदि गंगा माँ है तो उन्हें ना किसी अभियान की आवश्यकता है और ना ही किसी विशेष दिवस की वे तो आदी से अंत तक अविरल , अटल , अमर जीवन दायिनी धारा है । क्योंकि हमें पता है जिन ठाकुर जी की चरण कमलों से वें अवतरित हुईं हैं उनकी कृपा से प्रत्येक माह की अमावस्या को श्री वृंदावन धाम (11 कि. मी.) की पैदल परिक्रमा करते इतने वर्षों में माँ गंगा की तरह माँ यमुना की हर दशा को अच्छे से देखा है साथ ही यह भी महसूस किया कि माँ की ममता, उनका प्यार और आशीर्वाद जब उन्हें के लिए भार हो जाए तो वही माँ रौद्र रुप भी धारण करती है।

इन्हें परिक्रमा के मार्ग पर जब हमने माँ यमुना के जल को प्रदुषित करते एक परम भक्त से पूछा तो वे बड़ी शालीनता से बोले " अरे मैडम ! आप नहीं जानती ये तो जगत जननी माँ है। और माँ अपने बच्चों की गंदगी से कभी नहीं कतराती वो तो अपने बच्चों के मल मूत्र और सारी गंदगी सब समा लेती है अपने भीतर ' माँ का तो हृदय ही बहुत विशाल होता है। उस समय हम कुछ देर के लिए अंधे भैरे गूंगे से हो गए। लेकिन हमने कहा अवश्य कि माँ को अपनी हर प्रकार की गंदगी दे कर उनकी दया धैर्य और ममता को इतना भी विवश मत करो कि वह तुम्हारी अमर्यादित कुकृत्यों के कारण अपनी मर्यादा तोड़ने पर विवश हो जाएं और तब तब सिवाय सिर धुनने के कुछ नहीं बचेगा।

हम जानते हैं कि हम यदि विकास चाहेंगे तो इन पुण्य जीवन दायिनी माँ जैसी नदियों और प्राकृतिक संपदाओं को हानि पहुंचनी ही है ' और यदि इन्हें हानि से बचाते है तो हमारा विकास कार्य बहुत हद तक अवरुद्ध होता है। लेकिन फिर भी जो हमने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से देखा और महसूस किया है ! उससे तो माँ गंगा का को भी विषय चता का है ही नहीं?

कारण कि जैसे भगवान श्री कृष्ण बांसुरी अवश्य बजाते हैं अपने भक्तों से प्रेम भी बहुत करते हैं परंतु यदि किसी ने उनके जीवन

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

लघुकथा

दायिनी बांसुरी की धुन को अथवा प्रेम को अनाचार से परखने की भूल की..तो फिर वही हाथ सुदर्शन चक्र भी उठाने में संकोच नह करते।

अतः किसी को कहने कि आवश्यकता ही नहीं कि माँ गंगा को ना तो किसी स्वछता अभियान की आवश्यकता है और ना ही किसी विशेष दिवस की। बस हमें मां गंगा की कदर करने और स्वयं मर्यादा में रहने की आवश्यकता है। वरना वह दिन दूर नहीं जब माँ अपने ऊपर हो रहे अत्याचार से परेशान हो अपना रौद्र रुप धारण कर हम सब अनाचारीयों , गंदगी फैलाने वालों, उन्हें प्रदुषित करने वालों को' जिस तरह हमारी हर गंदी कुकृत्यों को अपने में समाहित कर लेत है उसी तरह हमें भी जड़ मूल सहित अपने में समाहित करेंग और तब हम खुश हो कर ये कह कर दिखाएं कि "चलो माँ है ! सब कुछ अपने बच्चों का बच्चों सहित अपने में समाहित कर लिया। क्योंकि हम उस देश के वासी है जिस देश में गंगा बहती है।

हर हर गंगे

संतोष शर्मा शान
हाथरस

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

महामारी

एक-एक मरीज के पास दौड़-दौड़ कर डाक्टर रमन जा रहा था। अदब से बात करता, दवा अपने हाथों से देता। पिछले ३ महीने से अपने घर को भूल गया और जन सेवा में जुटा हुआ था। किसी से कोई पैसा न लेना, मुफ्त इलाज करते करते वो ख्याति अर्जित की कि लोग जब घर जाते थे तो उन्हें भगवान की संज्ञा देकर जाते। बार-बार प्रभु का आभार जताते कि इस प्रकार का इंसान धरती पर पैदा किया, जो जन सेवा में जुटा रहता है। डाक्टर रमन का स्वभाव इतना मधुर की सभी से हंस कर खुश होकर बात करता किसी प्रकार की कोई चेहरे पर दर्द का आभास नहीं। रात को भी एकाध घंटे ही सो पाता। इतना नाम कमाया शायद पहले कभी किसी ने कमाया होगा।

चंद ही दिन बीते डाक्टर के मन में प्रलोभन जागा। महामारी फैल गई, भारी हुजूम चलकर उनकी ओर आने लगा परंतु आज वह डाक्टर वैसा नहीं था जो पहले था। जब भी कोई मरीज जाता जमकर पैसे लेता।कोरोना काल में तो कितने ही कोरोना मरीज आए, लुटकर चले गए, कितनों की जान चली गई। धीरे-धीरे बात पूरे शहर में फैल गई। आज यह डाक्टर पहले वाला डाक्टर नहीं रहा। लोग दर्द के मारे उसे डाकू करने लग गए। डाक्टर के पास आने वाले बेचारे रोते हुए आते और ज्यादा रोते ही घर जाते। ऐसी बुरी हालात शायद पहले कभी नहीं देखी थी। एक बार जो यहां आ गया लाखों रुपए के नीचे चला गया और स्वास्थ्य लाभ भी न के बराबर हुआ।

जो रमन के अस्पताल से बाहर जाता वह बस गाली देते हुए जाता और कहता की भगवान ऐसा राक्षस डाक्टर धरती पर क्यों भेजा? सचमुच डाक्टर के कार्यशैली को देखकर आंखों में आंसू आ जाते पर कर भी क्या सकते हैं। सभी के मुख पर एक ही शब्द था-पहले वाला नहीं रहा वो।

होशियार लसह यादव
कनीना- 13027
मोहल्ला-मोदीका वार्ड नंबर-01
जिला महेंद्रगढ़, हरियाणा
फोन- 09416348400

कहानी

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटसएप करें

बेटी की कलम

अविनाश अपने बॉस के जुल्म से बहुत परेशान था। उम्र हो चुकी थी तो अब कहीं जाब छोड़ कर जाना मतलब अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसा था। परिवार का खर्च और दोनों लड़कियों की शादी भी करनी थी। सब कुछ देर से होने पर उम्र बढ़ गई और और जिंदगी थोड़ी पीछे रह गई।

घर में पत्नी हर बार कुछ न कुछ नई वस्तुओं की लेने की चाह उन्हें और परेशान कर देती थी। बेटियों की पढ़ाई आजकल अच्छा एजुकेशन अच्छे कालेज एक स्टेटस बन गया है। लड़कियों के ख्वाब भी आसमान छूने लगे थे लेकिन पूरे कैसे होंगे। यह कौन सोचेगा ?, ख्याली पुलाव की थाली रोज रात पलंग पर लेटते ही सामने आ जाती। सुबह होते ही भगवान का नाम लेने से पहले बास का खड़ूस चेहरा सामने आ जाता और दिन खराब हो जाता।

बास भी अविनाश की मजबूरी को अच्छे से समझता इसीलिए वह अविनाश की कमजोरी का पूरा-पूरा फायदा उठाता। पर कहे किससे घर में कोई अविनाश की परेशानियों को समझने वाला नहीं था। आफिस में रह देके एक सुशील कुमार ही था जो उम्र में उनसे बहुत कम था पर दोस्त की तरह था तो वह उससे अपनी आफिस और परिवार की सारी कहानियां रोज लंच समय में सुनाकर अपना पेट खाने से भर लेते और दिमाग बातों से खाली कर लेते। उसके बाद फिर वह अपनी इम्यूनिटी बूस्ट कर काम पर लग जाते।

एक शाम को खाना खाते वक्त अपनी पत्नी से बात कर रहे थे। की बड़ी बेटी चहक कर आई और बोली- "पापा कल स्कूल में वाद विवाद प्रतियोगिता है, मुझे विपक्ष में बोलना है, जरा पढ़ो तो मैंने कैसा लिखा है। बेटी का विपक्ष भाषण पढ़कर अविनाश को एक ताकत की अनुभूति हुई। गलत बात का खुलकर विरोध किया गया था। बेटी की कलम उन्हें ताकत का एहसास करवा रही थी।

दूसरे दिन अविनाश आफिस पहुंचा तो फिर वही बास की तिरस्कार भरी नजरें देख कुछ शब्द सुनने से पहले ही अविनाश ने अपना त्याग पत्र उठाया और जोर से चिल्ला पड़े- नहीं करनी मुझे यह नौकरी, क्या होगा दूसरी जगह कम तनख्वाह पर काम कर लूंगा, कम से कम इज्जत से तो जी लूंगा, आप मुझे पैसा देते हैं तो मैं आपको काम करके भी तो देता हूं, फिर इतनी झिड़क क्यों...?,

बास अविनाश के तेवर देख घबरा गया उसे उनके अनुभव की बहुत जरूरत थी। त्यागपत्र देख उसके पाँव लड़खड़ाने लगे। कहने लगा- क्षमा करें.. आप हमारे वरिष्ठ हैं, आपका सम्मान करना ही हमारा कर्तव्य है,भूल हो गई अविनाश जी। अपने बास से अपने लिए इतने इज्जत भरे शब्द जी सुनकर उन्हें ऐसा लगा जैसे किसी ने उन्हें एक बोतल खून चढ़ा दिया हो। आज उन्होंने अपने बेटी के कलम की ताकत को ही अपनी ताकत बना लिया था। वह गर्व से अपने स्थान पर बैठ गए। बास का व्यवहार अब उनके प्रति नम्र और आदर पूर्वक हो चुका था। वह मेज पर पड़ी कलम को जीत भरी नजरों से निहारने लगे।

वंदना पुणतांबेकर
इंदौर

संस्मरण

कावेरी

यह घटना१६८८ की है। मैं गाँव अपने ससुराल में थी। मेरे दादा ससुर जी को गो सेवा का बड़ा शौक था। पूरा परिवार बड़े प्रेम से गाय की देखभाल करता था। गाय के नाम थें जमुना, कावेरी, गंगा और बछड़ों के नाम कपिल, भरत, लक्ष्मी। दादाजी रोज सवेरे गाय को चरवाहे के पास छोड़ने जाते।

एक शाम कावेरी नहीं लौटी। घर पर कोहराम मच गया। कावेरी को ढूंढने के लिए सभी ने अपना-अपना प्रयास किया। पापाजी दादाजी खाली हाथ लौटे, कावेरी नहीं मिली। सभी मेरे पति देव के आने का इंतजार कर रहे थे। स्कूटर आकर रुका। पतिदेव का उदास चेहरा देख, पापा जी ने पूछा, "कावेरी नहीं मिली" उत्तर के बदले उनकी आंखें डबडबा आयी, गला रूँध गया। सभी की बेचैनी और प्रश्न की बौछार बढ़ गई। वे बुझी आवाज से बोले "कावेरी परलोक चली गई। एक खेत में जाकर उसने गर्मी की ज्वार खा ली। पानी नहीं मिलने से उसका पेट फूल गया। जहर बन जाने से उसकी मृत्यु हो गई।" हे राम! राम-राम और दादाजी रोने लगे। घर के सभी सदस्य दुखी थें। आस-पास मोहल्ले तक भी समाचार पहुँच गए। घर के बाहर भीड़ इकट्ठी हो गई। सभी अपने-अपने ढंग से दुख और संवेदना प्रकट कर रहे थें। उस दिन घर में किसी ने ठीक से खाना भी नहीं खाया।

कावेरी को गए चार दिन बीत गए। चौथे दिन एक बूढ़ी अम्मा ने आकर दरवाजे पर आवाज लगायी, सेठजी ओ सेठजी, "कहती हुई चौक तक आ गई। दादाजी ने हाथ जोड़कर अभिवादन किया, "जय श्रीकृष्ण।"अम्मा शिकायत करने लगी, "मैंने तुम्हें ऐसा क्या कह दिया? क्या मैंने तुम्हारी कावेरी को दुत्कारा जो तुमने कावेरी को मेरे घर नहीं आने दिया। मैं रोज उसकी रोटी बनाती हूँ।" दादाजी रूँधी आवाज से बोले, "भाभी ऐसी कोई बात नहीं है। कावेरी तो चली गई। हमें छोड़कर परलोक चली गई।"

अम्मा जो कि लड़ने आयी थी, यह सुनकर स्तब्ध रह गई। हे राम! राम-राम बोलती हुई पास रखी कुर्सी पर बैठ गई। रो-रो कर कावेरी के गुणों का बखान करने लगी और दादाजी को सांत्वना देने लगी। "शायद हमारे भाग्य में उसकी इतनी ही सेवा लिखी थी।" मैंने कौतुहल वश उन अम्मा के बारे में अपनी सासू माँ से पूछा। मम्मी जी ने बताया कि, "चरवाहे के पास गाय को छोड़ने जाते हैं तब रास्ते में इनका घर आता है। ये कावेरी को रोटी खिलाती थी और दुलारती। कावेरी और उनके बीच पिछले जन्म का कोई संबंध होगा जो कावेरी अम्मा के बाहर न मिलने पर 'माँ-माँ' करती हुई पोल में घुस जाती और चौक में खड़ी होकर इंतजार करती। अम्मा उसे रोटी खिलाती दुलारती तब वह मुड़कर वापस बाहर आ जाती।"

अरे वाह! बड़े आश्चर्य की बात है। मैने ऐसा अनोखा प्रेम पहली बार देखा। समय बीत गया परंतु पूरा घटनाक्रम मेरे मानस पटल पर एक अमिट छाप छोड़ गया। आज के इस भौतिक प्रगति के समय में ऐसा निश्छल प्रेम और लोग जाने कहां गए?

श्रीमती उषा सोमानी
चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

कहानी

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

मुग्धा

मुग्धा रूप रंग में साक्षात सौंदर्य की देवी प्रतीत होती थी। गौर वर्ण, श्यामल केश,सुराही जैसी गर्दन और चाल ऐसी लुभावनी की हिरणी भी शर्मा जाए। पाक कला में दक्ष मुग्धा ,पढ़ाई में सामान्य रही थी। उसकी माँ सावित्री देवी ने उसे बड़ी ही सादगी से पाला था। कभी मुग्धा आधुनिक परिधान पहनने के लिए कहती तो सावित्री देवी तुरंत टोक देत "मुग्धा बाबुल के घर लड़की सादा ही रहता हैं, अपने घर जाकर चाहे जितना फैशन करना"

मुग्धा के कालेज से लड़कियाँ एजुकेशनल टूर पर जा रहीं थीं उसने भी माँ से अपने जाने के विषय में पूछा तो माँ का जवाब आया "मुग्धा मुझे विवाह से पूर्व लड़की का यूँ घूमना -फिरना पसंद नहीं, जितना भारत भ्रमण करना हो अपने घर जाकर करना" मुग्धा उदास होकर स्वयं से पूछती "क्या यह मेरा घर नहीं है?"

मुग्धा को कालेज के एक फंक्शन में गायत्री देवी जो कालेज की ट्रस्टी थीं, ने देख लिया और अपने बेटे मोहित के लिए पसंद कर लिया। विवाह का प्रस्ताव मुग्धा के घर पहुंचा तो मुग्धा की माँ अत्यंत प्रसन्न हुईं। आखिर इतना धनाढ्य परिवार जो मिला था।

आखिरकार मुग्धा का विवाह मोहित से हो गया। सुहाग कक्ष में ही मुग्धा के समक्ष मोहित की सच्चाई सामने आ गयी। वह मदिरापान अफ़ीम चरस आदि का सेवन करता था। और फिर पशुवत आचरण करता था। मुग्धा के लिए उसके साथ जीवन निर्वाह करना किसी चुनौती से कम न था। १ माह बाद मुग्धा ने मोहित के वहशीपन की निशानियाँ अपनी सासू माँ को दिखाई तो उन्होंने तपाक से कह दिया "देखो मुग्धा मैंने मोहित को बड़े लाड़-प्यार से पाला है, उसके लिए बहुत अमीर घरानों से रिश्ते आये किंतु मोहित ने तुम्हें कालेज के सांस्कृतिक कार्यक्रम में देखा तो तुम पर हृदय हार बैठा। मैंने उसे बहुत समझाया कि तुम्हारा लो स्टेटस हमारे स्टैण्डर्ड से मैच नहीं करता, पर उसकी मति मारी गयी। और आज तुम मेरे मोहित पर ही उंगलियाँ उठा रही हो। तुम क्या जानो ये हाई सोसायटी के शौक हैं। यदि तुम हमारे साथ एडजस्ट नहीं कर सकतीं तो अपने घर चली जाओ " सुनकर मुग्धा के हृदय का दर्पण चूर -चूर हो गया। एक वाक्य जो उसके कानों में चुभने लगा वह था "अपने घर चली जाओ"

क्या यही इस समस्या का समाधान है? मायके में बेटियों को यह कहकर बड़ा किया जाता है कि अपने घर जाकर अपने सारे अरमान पूरे करना... और फिर ससुराल से यह कहकर दुत्कारा जाता है कि "अपने घर चली जाओ". . आखिर एक लड़की का घर कौन सा होता है?

मायका,जहाँ उसे ससुराल की अमानत समझकर बड़ा किया जाता है...या ससुराल जहाँ उसे हर क्षण परायेपन का एहसास कराया जाता है।

प्रीति चौधरी "मनोरमा"
बुलन्दशहर

लेख

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

बेदर्द हाकिम

"कहूँ क्या बदनसीबी का, बताओं
हाल मैं तुमसे।
चला जब छोड़ दुनिया तो, कफ़न भी
ना मिला मुझको।।

एशिया महाद्वीप में गांवो की राजधानी कहे जाना वाला उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जनपद का गहमर गांव 10 मई की शाम अचानक देश-व्यापी चर्चा में आ गया। यह गांव इस बार कोई उपलब्धि नहीं बल्कि गहमर गंगा किनारे मिले शवों की संख्या के कारण चर्चा में आया। गंगा के मैदानी भाग में आने एवं सागर से मिलन स्थल गंगोत्री के ठीक मध्य में पड़ने वाले गहमर के घाटो पर देश ही नहीं बल्कि विदेश से मीडिया पहुँचने लगी। शवों की संख्या व शवों के अंतिम संस्कार पर सवाल उठने लगे। गंगा में मिले शव को जिस प्रकार हटाया गया वह आने वाले समय में एक गंम्भीर समस्या बन कर सामने आयेगा।

घटना की शुरूआत वहां से होती है जब तहसीलदार से प्रमोशन पाकर सेवराई के उपजिलाधिकारी बने रमेश मौर्य ने 10 मई को जिले के कर्मठ और सुलझे हुए जिलाधिकारी महोदय के सामने गंगा में उत्तर प्रदेश की सीमा में शवों के मिलने की संख्या की गलत तस्वीर पेश की और जिलाधिकारी महोदय ने यह समझते हुए कि उनके सहयोगी सही तस्वीर दिखा रहे हैं मीडिया को एक शव मिलने का बयान दे दिया। जिस समय जिलाधिकारी महोदय एक टीवी चैनल को एक शव मिलने का बयान दे रहे थे उस समय 'बारा' सहित गहमर के बड़की-बाग, सोझवा घाट, पंचमुखी घाट और मठिया घाट की सीढ़ीयाँ बह कर आये शवों से अटी-पड़ी थी। जब मीडिया ने दुबारा जिलाधिकारी महोदय को सच की तस्वीर दिखाई तो उन्होनें संभवतः एस.डी.एम सेवराई को जम कर लताड़ लगा । ऐसे आपको बताते चले कि उपजिलाधिकरी सेवराई का जिलाधिकारी महोदय से लताड़ पाना नया नही है। कई जनहित के कामों में लापरवाही के कारण महोदय आलाधिकारीयों की नाराजगी झेलते हैं।

सुत्रो की माने तो जिलाधिकारीय महोदय की फटकार का असर यह हुआ कि उपजिलाधिकारी महोदय रातो-रात भाग कर गहमर गंगाघाट पर आये,और गहमर के सुधीर सिंह, कामदेव सिंह सहित कई समाज सेवीयों के लेकर सफाई में जुट गये। रात भर घाटो से शव हटाने का क्रम चलता रहा, लेकिन यहां भी शासन के आदेश की खुली अवहेलना हुई। शासन का स्पष्ट आदेश था कि, गंगा में मिले शवों के साथ सम्मान जनक व्यवहार हो और उनका अंतिम संस्कार किया जाये। परन्तु प्रत्यक्षदर्शीयों के अनुसार गंगा में मिले शवो को या तो किनारे पर ही नमक, चूना डाल कर छोड़ दिया जा रहा था या उन्हें गंगा के इस पार और उस पार बालू में केवल महज दो से तीन फीट गढ़्ढा खोद कर उसमें डाल दिया गया।

यही नहीं मौजूद एस.डी.एम महोदय ने 11 मई की सुबह लगभग 9 बजे शवों को दफनाना भी छोड़ दिया और नाव में लगे इंजन के पास बंधवा कर उसे गंगा में जहाँ

पर भी तेज धार दिखी वहां बहा दिया। एस डी एम साहब की मौजूदगी में जिस प्रकार शवो को साथ व्यवहार किया गया वह बेहद की अमानवीय था। लेकिन राजनैतिक सरपस्ती लिये उपजिलाधिकरी को इससे क्या लेना देना था, उन्हें तो बस कालम की पूर्ति करनी थी ।

11 मई को दोपहर होते होते उपजिलाधिकारी महोदय ने समस्त शवों को हटा कर उनका अंतिम संस्कार का कार्य पूरा बता कर अपनी पीठ खुद ठोंक लिया, मगर शायद उपजिलाधिकारी महोदय को कैमरे की नज़र का अंदाज नहीं था, गहमर नरवा घाट से महज 300 मीटर की दूरी पर ए0बी0पी गंगा की टीम के सामने कैमरे पर तीन शव उसी तरह बेबस और लाचार दिख गये। उसके बाद तो गहमर में जिस प्रकार देश-विदेश की मीडिया पहुँची और शासन के दावो की पोल खोलना शुरू किया, गहमर राष्ट्रीय ही नहीं अन्तराष्ट्रीय चर्चा में आ गया ।

न करता इस कदर अपनो, को को
भी विदा हाकिम।
मगर ये मुफलिसी दिल को, बड़ा मजबूर कर
देती।।

उपजिलाधिकारी की देख-रेख में गंगा में मिले शवों को जिस प्रकार से हटाया गया है इस बात से इंन्कार नहीं किया जा सकता है कि, तेज हवा या पानी का स्तर बढ़ने के बाद वह शव निकल कर पुनः गंगा में नहीं आयेगें। शवो को गहमर के सोझवा घाट, पंचमुखी घाट पर भी सीढ़ीयों के ठीक नीचे दफन कर दिया गया है। जिससे आये दिन पशु-पक्षीयों का मेला वहां लगा रहता है। गंगा के पार लोगो का जाना भी काफी कठिन हो गया है।

विदित हो कि गहमर गंगाघाट ही नहीं गहमर गंगा के पार बालू एवं उधर के खेत भी जो भांवरकोल थाने के अधीन है। गहमर के हैं, जहां गहमर के लोगो का रोज आना-जाना लगा रहता है। निश्चित ही आने वाली बरसात गहमर क्षेत्र के लोगों के लिए आने वाले दिनों में मुसीबतों का सबब बनने जा रहा है। आने वाले दिनो में गंगा नर-कंकाल से भर जायेगी। जिसकी कल्पना से अभी ही गंगा किनारे के लोग सहम रहे हैं। प्रमोटेड एस डी एम सेवराई ने शासन के शवों के अंतिम संस्कार के आदेश के बावजूद क्यों इन शवों को महज जरा जरा से गढ्ढे खोद कर घाटो एवं गंगा के पार बालू में दफन कराया? क्यों नहीं उन्होनें शवो का अदेशानुसार अंतिम संस्कार कराया यह एक जाँच का विषय है।

देखना होगा कि, इस शवो के अंतिम संस्कार की बात को ठेंगा दिखा कर शवो को अपमान जनक तरीके से किनारे लगाने वाले उपजिलाधिकारी सेवराई पर क्या कार्यवाही होती है? लेकिन शवों के साथ मानवता के हद से बाहर जाकर इस तरह व्यवहार करने वाले सेवराई के प्रमोटेड उपजिलाधिकारी महोदय के लिए इतना तो कहना पड़ेगा कि वाह रे!..एस डी एम साहब आपकी कार्य प्रणाली अनुकर्णीय है।

साहित्य सरोज ब्यूरो

काव्य

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटस्एप करें

दृष्टिगोचर

टेढ़ा-मेढ़ा
निर्बल , निर्वाकार सा
दृष्टिगोचर
यह वृक्ष
अत्यंत उपयोगी
प्रतीत हुआ है ।

विद्यार्थीगण
इसकी छत्रछाया में
विद्यर्जन कर रहे हैं
स्वयं तथा
राष्ट्र का उज्जवल
भविष्य संवार
गढ़ रहे हैं ।

नवीन
उज्जवल
प्रभात के
मार्ग प्रशस्त कर
रहे हैं
उस बौने से
निरीह से
वृक्ष के छांव में ।

जो प्रतीत होता है
दर्बल एवं
दीन-हीन सा
किंतु सुशोभित है
सुनहरे पुष्पों से
प्राथमिक विद्यालय
प्रांगण के मध्य ।।

हितेंद्र कोंडागांया
9131220469

ग़ज़ल

एक दिन साँसों की ये डोर टूट जानी है।
चाहे हो राजा रंक मौत सबको आनी है।।

दो पल हमको भी जी लेने दो मुसाफिर की तरह।
कौन सा हमको यूँ सदियां यहां बितानी है।।

जहां है रंगमंच सबका है किरदार अपना।
हर एक शख़्स की दो पल यहाँ कहानी है।।

इतना इतराते क्यूँ हो अपनी खूबसूरती पे।
वक़्त के साथ सूरतें यहाँ ढल जानी है।।

अपने यौवन पे क्यूँ इतना गुमान करते हो।
आएगा कल बुढ़ापा आज गर जवानी है।।

कभी तो सँग मिरे भी हँस के गुजारो दो पल।
महज़ ये चार पलों की तो जदगानी है।।

मुझे दो पल सुकून के अता कर 'रघुवंशी'।
दौलतें शोहरतें यह पर छूट जानी है।।

_राघवेंद्र लसह 'रघुवंशी'
पत्योरा हमीरपुर उत्तर प्रदेश
मोबाइल- 6387961897

लेख

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

हमारा नजरिया हमारी सोच

हमारी सोच पर निर्भर होता है कि हमारा नजरिया क्या होगा ? क्योकि हम जिस सोच और नजरिये से सामने वाले को देखेगे वो हमे वैसा ही दिखेगा। अगर हम किसी व्यक्ति की अच्छा यों पर अपना ध्यान केन्द्रित करेगे तो हमें उस व्यक्ति की अच्छा यों की जानकारी होगी। और अगर हम किसी व्यक्ति की कमियो को ढूड़ने का प्रयास करेगे तो हमें उसकी कमिया और बुरा यो की जानकारी होगी। यानि ये हमारे ऊपर निर्भर है कि हम इस जगत को, जगत के प्राणियों को, जगत के जीव-जंतु, जगत के पेड़ पौधो तथा इस जगत की हर सजीव-निर्जीव वस्तु को किस दृष्टि से देख रहे है ?अगर हमे को कुरुप, भद्दा या गंदा दिख रहा है तो इसका अर्थ यह नही कि वो सामने वाला कुरुप, भद्दा और गंदा है। क्योकि यह हमारी दृष्टि दोष की समस्या है कि हम सामने वाले की सुंदरता को नही ढूड़ पा रहे है। इसको हम एक उदाहरण के तौर पर समझ सकते है - हमने एक रुपये का सिक्का मेज के बीच में रख दिया है और उसके चारो ओर कुछ व्यक्तियों को खड़ा कर दिया गया है। अब वह सिक्का एक व्यक्ति को त्रिभुजाकार दिख रहा है तो एक व्यक्ति को आयताकार दिख रहा है तो किसी को चौड़ा दिख रहा है तो किसी को लंबा दिख रहा है। यानि हर व्यक्ति उस सिक्के को जिस नजरिए से देख रहा उसे वह सिक्का उसी प्रकार दिख रहा है। इसका अर्थ यह नही कि सिक्का त्रिभुजाकार, आयताकार, लंबा या चौड़ा हो जाएगा। सिक्का तो गोल ही रहेगा।सही अर्थो में सामने वाला कुरुप नही है, बल्कि यहाँ हमारी सोच कुरुप होती है।अक्सर हम सभी कमजोर श्रवणशक्ति वालो को देखकर मुस्करा कर देते है। हम यह नही समझते कि हम कर क्या रहे है ? हम किस पर हँस रहे है ? हम किसका अपमान कर रहे है ?

हम ये जानते है कि सृष्टि का निर्माण परम परमेश्वर ने ही किया है और परम परमेश्वर ने ही हम सभी मनुष्य जातियो का भी निर्माण किया है, और उसी ने हमे लंबा, चौड़ा, गोरा,काला, संवाला आदि प्रकार की कलाओ से विभूषित किया है। यानि उसी परमात्मा ने ही किसी को कुरूप या कम श्रवणशक्ति का भी बनाया है। यानि लोगो की कमिया ढूड़ने का अर्थ है परम परमेश्वर की चित्रकला , सौन्दर्यकला में कमियाँ ढूड़ना। एक विकृत मनुष्य का उपहास उड़ाना यानि परमेश्वर की कला का उपहास उड़ाना। यानि परम परमेश्वर का अपमान करना।कहने का आशय यह है कि हम इस सृष्टि को किस नजरिए से देखते है ? हम इस सृष्टि को जिस नजरिए से देखेगे हमे वह सृष्टि उसी नजरिए से दिखेगी।

अभी हाल में आई उत्तराखंड आपदा के लिए हम उस परम परमेश्वर को किसी भी प्रकार से दोषी नही ठहरा सकते है। उत्तराखंड में आपदा परम परमेश्वर की इच्छा से नही बल्कि वनो की अंधाधुंध कटा, बड़े-बड़े विशाल बांधो से। यानि प्रकृति का अंधाधुन शोषण से हुआ है। ये थार का मरुस्थल, ये साहारा का रेगिस्तान नश्वर की देन नही है। बल्कि ये मनुष्य के क्रियाकलापों की देन है।कहने का आशय यह है हमारी सोच ही हमारा नजरिया तय करती है। यानि ये हम पर निर्भर है कि हम इस सृष्टि को किस नजरिए से देखते है ? हम जिस नजरिए से इस सृष्टि को देखते है। हम उसी सृष्टि से इस सुंदर सृष्टि को रुपांतरित करने की चेष्टा करते है।

रोहित मिश्र, प्रयागराज, उत्तरप्रदेश
मोबाइल नंबर 752336082

कविता

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

मेरे यार की

मेरे यार की याद सताने लगी
न द आँखों से दूर जाने लगी
वो सपनों में आकर यू सताने लगें
वहा फलक पर चाँदनी मुस्कुराने लगी
जब वो आँखों मे आकर गए ठहर
तब बातों का कारवां चला रात भर
एक तो स दयों की वो लंबी लंबी रातें
ओर भी सर्द करती तेरी यादें
जब हम तन्हा से करते रहे
तेरी बातें वक़्त गुजरता रहा
घड़ी भी अपनी राग सुनाती रही
तुम रूठते तो में मनाती
कभी में रूठती तो तुम मनाते
ऐसे ही तेरी यादों का कारवां चलता रहा
देर रात तक सोचते रहे जब
हम अपने यार को पहले प्यार को

नेहा शर्मा विदिशा मध्यप्रदेश

कहानी

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

गांव की गलियां

गांव की हरियाली देखकर जी नहीं करता कि शहर की ओर लौट कर न जाऊं पर क्या करूं छुट्टियों का वक्त खत्म हो गया हैं। दादी का घर छोड़ अब शहर का रास्ता देखना ही होगा । आज छुट्टी का आखिरी दिन है शहर जाने के लिए सारा सामान बांधना होगा । इन ३० दिनों में लापरवाह की तरह इधर उधर सारा सामान बिखेर दिया हैं । अब सारा सामान इकट्ठा करके पैक करना पड़ेगा ।

मोनू अपनी जिन्स को उठाकर झाड़ती हुई कहती हैं ” दादी मां ,दादी मां मेरी काले रंग वाली कुर्ती नहीं मिल रही है ।आप ने देखी है कहीं है मेरी कुर्ती?”

दादी मां : ”रूक जा ! मैं ही लेकर आती हूं । दादी ने संदूक के ऊपर अपने कपड़ों के साथ पड़ी कुर्ती को उठाकर मोनू के साथ में दी और कहा रखती हो और कहां ढूंढती हो ।

मोनू : ओहो! मैं ही रखकर भूल गई। थैक यू दादी मां ।आप बहुत अच्छी हो ,आपकी जगह मम्मी होती तो बिगड़ जाती ।

दादी मां : तुम्हारी मां ऐसा करती है तो इसके पीछे कईई कारण हैं । वो तुम्हें तुम्हारे भले के लिए ही कहती हैं । जब तक तुम अपनी चीजों का रख रखाव खुद नहीं करोगी तब तक अपनी जिम्मेदारी के प्रति जागरूक नहीं हो पाओगी और फिर वो भी तो नौकरी करती है ।घर और बाहर दोनों की जिम्मेदारी वो उठाती है । वो ठीक बोलती है ।”

मोनू : मुझे से भूल हुई है , दादी मां। आगे से कभी ऐसा नहीं करूंगी ।अपना सब सामान जहग पर रखूंगी ।

दादी मां : शाबाश! मुझे तुमसे यही उम्मीद है ।

मोनू ने बड़े उत्साह से अपना एक एक समान बेग में रखकर पैक कर दिया और मन में सोचने लगी आज से अपने छोटे-छोटे काम, बिना किसी को परेशान किए खुद कर लिया करेगी । तभी दादी ने रसोईईघर से आवाज लगाई मोनू ओ मोनू आकर खाना खा ले ।बस के समय हो जाएगा । जल्दी से आ जा।

मोनू : आई दादी मां।”

मोनू बैग घसिटते हुए आंगन में ले आई और रसोईईघर की ओर गुनगुनाते हुए बढ़ी ।

दादी मां : ”बड़ी खुश नजर आ रही हो ।”

मोनू : ”नहीं, दादी मां । मेरा बिल्कुल मन नहीं, गांव को छोड़कर शहर जाने का । गांव की गलियों में जहां धूल मिट्टी के साथ पांव के निशान छूट जाते हैं । पगडंडी से चलते चलते सभी की खैर खबर लेते लेते कितना आनन्द मिलता है ।वो शहरो की सड़कों पर भूल कर भी नहीं मिलता । ”

इतने में दादी :मोनू सुन रही है सारा सामान बांध लिया तुमने । देसी घी के लड्डू बनाई हूं संग लेते जाना। दादी की याद तो आएगी ना वहां । कुछ सामान और बांध देती हूं रास्ते में खा लेना । बाहर का सामान मत खाना । ”

मोनू : हां, दादी मां । थोड़ा ज्यादा करके देशी घी के लड्डू देना मैं अपनी सहेलियों को भी खिलाऊंगी।

दादी मां : ”बहुत सारे बनाए ।सबको दे देना । मां बाबा को भी देना है ।”

मोनू : ”हां ठीक है ठीक है।”

दादी मां : थाली में रोटी सब्जी देती है और साथ में दही का कटोरा देती है ।

मोनू : ”अब दही क्यों दादी मां ।”

दादी मां : ” दही शुभ माना जाता है और फिर भी पेट के लिए भी अच्छा है ।”

मोनू चुप चाप खाना खाती है और थाली को साफ करके बर्तन की टोकरी में रख देती है । मन में विचार करती है कि अभी तो तीन घंटे बाकी है क्यों न बगीचे से आम तोड़ कर लें आऊं ।अपने साथ ले जाऊंगी ।

दादी मां से अनुमति ली और बगीचे में जा पहुंची ।कुछ आम जो पेड़ पर लगे थे माली के तोड़ने को कहती हैं ।बूढ़ा माली आम पेड़ पर चढ़कर तोड़ देता है ।मोनू बूढ़े माली को इस उम्र में भी इतनी फुर्ती देख हैरान हो जाती है ।

बूढ़ा माली : ”बिटिया , ए लो आम ।सब ही तोड़ दी है ”।

मोनू : थैंक यू माली दादू ।

मोनू आम को छोटे बस्ते में भर कर रखती और दोनों हाथों से पकड़ कर आंगन में बस्ता ले आती है । बड़ी तकलीफ़ की अनुभूति हो रही थी आम के छोटे बस्ते को

भी उठाने में क्योंकि इस से पहले कभी उसने इतना भारी बोझ नहीं उठाया । सोचती है शहर जाकर टी. वी देखते -देखते बैठकर मजे से खाऊंगी। गांव की यादें पुनः ताजा हो जाएगी । दादी ने देसी घी के लड्डू का डब्बा भी ला दिया । कुछ रोटियां अचार के साथ बांध कर लें आई ।

दादी मां : मोनू , रास्ते में भूख लगने पर खा लेना । रोटी और अचार बांध दिया । ”

मोनू दादी की परवाह देख उससे रहा न गया ।

उसने कहा : ” दादी आप भी हमारे साथ शहर चलिए ना। हम सब साथ रहेंगे खूब मजे करेंगे आप मुझे वहां रोज लड्डू बना कर देना और इसी तरह से ख्याल रखना।” दादी का चेहरा मुरझा गया कुछ जवाब नहीं दिया।

मोनू ने फिर कहा- दादी क्या हुआ मेरी बात का बुरा मान गई हो ।यदि तुम नहीं जाना चाहती तो कोई बात नहीं ।

दादी : नहीं ,नहीं शहर में जाने से मेरा गांव सूना हो जाएगा । मेरा आम का पेड़ सूख जाएगा । मेरे आंगन की चिड़िया भूख से बिलख के मर जाएगी जिसको रोज रोटी देती हूं वह गाय मेरा इंतजार करेंगी । वह आंगन जो पत्तों की झुरमुट से भर जाता है जिस को झाड़ू देने के लिए रोज मेरा आंगन मेरी राह देखता है कौन उसकी साफ-सफाई करेगा । नीम के पेड़ के नीचे जो हम रोज बैठकर लंबे समय तक चौपाल पर बातें करती हैं । वहां वह माहौल दे पाओगी । नहीं नहीं मैं ताजी हवा को नहीं खोना चाहती । मैं इस आबोहवा में ही जीना चाहती हूं । तुम्हारा मन करे तो जब दादी से मिलने आ जाना । मुझे शहरों की गलियां नहीं जाना ।”

मोनू : दादी हम भी बच्चे हैं हमारा भी मन करता है, आपके साथ रहने को ।

दादी मां : शहरी जीवन व्यस्तता वाला जीवन, मेरे लिए खुशगवार ना होगा । रोज काम की आपाधापी में संस्कारों और मूल्यों का हनन होते हैं मैंने देखा है । ”

मोनू : ”दादी को अपने पास चारपाई पर बिठाकर दादी से पूछती है क्या सच में शहरी जीवन में संस्कारों और मूल्यों का मर्दन हो जाता है । आप ऐसा कैसे करती हो क्या आप कभी शहर गई हो ।”

दादी ने हंसते हुए कहा हां हां हां गई थी तुम्हारे दादा जी जब जवान थे तब काम करने की तलाश में शहद गए और मुझे भी संग ले गए । कुछ साल मैंने उसी शहर की गलियों में गुजारे हैं वहां मुझे कहीं छायादार पीपल का पेड़ नहीं मिला ।

मोनू : ”लेकिन दादी मां ये शहरीकरण के कारण हुआ है। कोई और बात तो नहीं है ।”

दादी मां : एक बार की बात है मैं और तेरे दादा गाड़ी लेकर शहर की ओर जा रहे थे । तभी अचानक मैंने रास्ते में एक जगह भारी तादाद में भीड़ जमा थी । मैंने तुम्हारे दादा जी को कहा एक बार गाड़ी साइड लगा दीजिए , देखती क्या हुआ । जब मैने आगे बढ़ कर देखा तो सभी लोग मोबाइल फ़ोन से वीडियो बना रहे हैं कोई फोटो खींच रहा है । जब मैंने भीड़ को साइड हटा कर देखा तो एक औरत बेसुध अवस्था में जिसके शरीर से खून टपक रहा है दर्द से कहरा रही है और लोग उसे वीडियो बना रहे हैं । कोई उसकी मदद को आगे नहीं बढ़ रहा है । मैंने उस भीड़ में किसी ऐसे शेर दिल इंसान को नहीं देखा जो आगे बढ़ कर उसकी मदद करें ।

वहां खड़े सभी लोगों से कहा इसकी मदद करनी चाहिए इसे अस्पताल पहुंचाना चाहिए सभी यह कहकर पीछे हट गए यह पुलिस केस हो सकता है अस्पताल ले जाएंगे तो हम भी फस जाएंगे । किंतु दादाजी ने मेरा साथ दिया और हम दोनों ने मिलकर उसे उठाया और अस्पताल की ओर ले गए । उसका खून काफी बह चुका था उसको भर्ती करवा दिया और उसका उपचार करवाया गया। डाक्टर ने कुछ जरूरी दस्तावेज भरने को कहा क्योंकि मैं अपरिचित थी । इसीलिए मैं संकोच में थी कि मैं क्या बोलूं किंतु नियमों के बिना कुछ नहीं हो सकता ।

उसी समय पुलिस बयान लेने के लिए आई और मुझसे भी सवाल जवाब करने लगी । मैं यह सोचकर हैरान थी सहायता करने का आधा हौसला इंसानों का इसी कारण शायद खत्म हो जाता है । हम मदद करने के लिए पीछे इसी कारण हट जाते हैं हम भी मुसीबत में फंस जाएंगे । शहरी मन की पीड़ा को मैंने बड़ी बारीकी से उस दिन समझा गांव की गलियां शहर की गलियों से किस प्रकार भिन्न थी । इसी कारण कहती हूं गांव की गलियां चकाचौंध से लाख भली ।

हेमलता गोलछा, गुवाहाटी

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

संस्मरण

उठ जा बेटा छः बज गए

9 अक्टूबर **1982**, हां यही तो थी सुबह हर दिन जैसी सामान्य. एक बार भी आने वाले तूफ़ान का अहसास ना कराया. बड़े प्यार से मम्मी ने सिर में हाथ फिरा कर जगाया था, "उठ जा बेटा, छः बज गए."एक बार ना लगा अब ये आवाज़ ये स्पर्श दुबारा कभी नहीं मिलेगा. पता भी होता तो क्या कर सकते थे? शायद कुछ कर पाते... मम्मी को अकेला तो ना छोड़ते कम से कम... काश...

सुबह सब कुछ बड़ी शांति से चल रहा था. एक बार भी ऐसा कुछ ना हुआ जो उस दिन को रोज से अलग बनाता। सब उठ कर अपने अपने कामों में लग गए हमेशा के जैसे। अपना अपना नाश्ता, अपना अपना टिफिन लिया हमेशा की तरह। स्कूल को निकल पड़े हमेशा की तरह। मम्मी-पापा बाद में निकले होंगे साथ-साथ हमेशा की तरह। दोपहर भी हमेशा जैसे थी। बड़ी बहने स्कूल से घर आ चुकी थी हमेशा की तरह। मुझसे आधा घंटा पहले जो छूट जाती थी. फिर मैं, और सबके बाद भैया. हम चारों ने साथ खाना खाया हमेशा की तरह। बड़ी दीदी अपने घर थी, जीजा जी और दोनों बच्चों के साथ, हमेशा की तरह। उनकी शादी को इतना समय बीत चुका था कि हम उनके बिना रहना सीख ही चुके थे लगभग। फिर पास में ही थी। जीजी के जाने से परिवार छोटा नहीं और बड़ा हो गया था हमारा। जीजाजी और दो बच्चे भी शामिल हो चुके थे हमारे परिवार में। फिर एक रुपया किराया भर की दूरी पर ही तो थी। जब दिल किया चले गए। किसी बड़े को साथ जाने जरूरत ना होती थी. वो दौर भी ऐसा था, उम्र में बड़ा हर व्यक्ति, चाहें अनजान ही क्यों ना हो, अभिभावक बन जाता था। अब तक सब कुछ हमेशा जैसा चल रहा था। मनु जीजी, जो हम चारों में सब से बड़ी थीं और मम्मी पापा की अनुपस्थिति में हमारी अभिभावक भी, मम्मी का खाना पैक कर उनके पास उनके क्लिनिक चल पड़ीं। मेरी एक सखी का घर रास्ते में पड़ता था और जीजी सायकिल से जाने वाली थीं। तो थोड़ी सी खुशामद के बाद वो अपने साथ ले जाकर उसके घर छोड़ने को तैयार हो गईं थी, इस शर्त पर कि गली के मोड़ पर उतार कर निकल जाएँगी वो। बस यहीं से वो दिन अलग हो चला था हमेशा से...

दीदी ने पांच बजे वापस जाते समय लेते हुए जाने का कहा था. मगर तीन भी ना बज पाए थे और भैया बदहवास से आए और बोले, "चल गुड़िया चल, मम्मी की तबियत खराब है. उनको अस्पताल लेकर गए हैं..."
मुझे लगा भैया तंग करने के लिए आए हैं जिस से घर वापस जल्दी ले जा सके। मुझे आज भी अपना उत्तर याद है जो भैया से पलट कर कहा था मैंने, "इतनी बुद्धू नहीं हूँ! मम्मी खुद डाक्टर हैं, वो अस्पताल नहीं जाती बीमार होने पर. "मगर भैया के बार बार कहने पर और उनकी घबराहट ने यकीन दिला दिया कि कुछ तो हुआ है. हम दोनो चले ही थे कि भैया से पूछा मैंने, "बड़ी जीजी को बताया किसी ने?" भैया के इनकार करने पर मुझे लगा कि उनको बताना चाहिए। मम्मी तो हम सबकी बराबर हैं। बस मैं वहीं से बड़ी बहन को बुलाने चली गई, और एक घंटे में जीजी, जीजाजी और बच्चों के साथ घर वापस भी आ गई थी।

मगर... इस एक-डेढ़ घंटे में तो हमारी दुनिया ही बदल चुकी थी. अपनी गुड़िया को एक नज़र देखने की इच्छा लिए मम्मी जा चुकी थीं भगवान के घर। हमें जो मिला, उसे तो लोग मिट्टी कह रहे थे।

मनु जीजी जब मम्मी का खाना लेकर उनके पास पहुंची तो मम्मी फर्श पर गिरी हुई थीं. उनको उलटी हुई थी शायद. आस पास के लोगों की मदद से अस्पताल पहुँचाया और पापा को स्कूल से बुलवाया. डाक्टर ने कहा, हृदयाघात था भीषण... हम इनको बचा नहीं सके।

पल भर में हमारा परिवार तिनका तिनका बिखर गया... जो पापा हर छोटी बड़ी बात में 'ईश्वरेच्छा बलीयसी' कहा कर करते थे, उनको पहली ईश्वर से शिकायत करते देखा था... बच्चों की तरह फूट-फूट कर रोते देखा। जिन मम्मी के बिना ना सुबह होती थी ना रात, अब उनके बिना रहना था जीवन भर। सबसे छोटी होने के बाद भी मुझे पूरा-पूरा अहसास था कि अब ज़िन्दगी बहुत मुश्किल हो जायेगी...माँ के जाने से जो रीतापन घर में मन और जीवन आ चुका था उसका कोई भराव नहीं था... अब कोई नहीं कहेगा 'उठ जा बेटा छः बज गए'।

सीमा सिंह
कानपुर
ई मेल –
libra-singhseema@gmail.com

संस्मरण

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटस्एप करें

माँ

माना कि गति जीवन का साज है ।किंतु यादे वो आवाज हैं जो हमें फिर फिर बीते हुए समय में खींच ले जाती हैं । मेरी माँ ऐसी ही वो आवाज थीं, जिन्हें याद कर जीवन के सकल साज स्वतः ही बज उठते हैं । माँ औपचारिक शिक्षा की दृष्टि से देखें तो पूर्णतः अशिक्षित महिला की श्रेणी में आएंगी किन्तु व्यवहारिक रूप से शिक्षित उनके जैसा दूसरा कोई नहीं दिखता ।कभी कभी तो लगता है कि मुन्शी प्रेमचन्द ने धनिया का पात्र मेरी माँ को ही देख कर गढ़ा होगा । मुहावरों और कहावतों का चलता फिरता ग्रन्थ अगर किसी को देखना है, तो वह मेरी माँ ही थीं ।

आज हिंदी से स्नाकोत्तर डिग्री है मेरे पास और सुशिक्षित बुद्धिजीवियों से युक्त पारिदृश्य ही मेरा वातावरण है। किंतु जन्म से जितनी लोकोत्तियाँ, मुहावरे और कहावतें मैने अपनी माँ से सुनी है, कहीं किसी एक ही पुस्तक या व्यक्ति में कभी नही देखी । मन आज भी बचपन का पाला छूने दौड़ता है तो दरवाजे पर माँ बैठी हुई नज़र आती हैं । मकान के बड़े से बरामदे को पार करते ही बाहर एक छोटी सी सीढ़ी के दोनों तरफ दो बड़े बड़े चबूतरे जिन पर शाम होते ही माँ पानी से अच्छी तरह से छिड़काव कर देती थी । फिर दोनों तरफ दो दो तखूत डाल दिये जाते हैं । बस संध्या की चौपाल यही जमती थी । इस पूरे चौपाल की मेहमानवाजी एकमात्र मेरी माँ के जिम्मे थी । वह यह कार्य बड़े शौक से करती थी ।सबसे सबका व्यक्तिगत रूप से हाल चाल पूछतीं और यथा संभव निशुल्क परामर्श भी प्रदान करती ।

रेलवे स्टेशन के ठीक सामने मेरा घर था । अतः लगभग प्रत्येक यात्री मेरे घर के सामने से ही गुजरता । माँ सब पर अपनी दिव्य दृष्टि लगाए रखती और लगभग सभी से पानी पूंछ लेती। पानी पीते वक़्त औपचारिक बातचीत के दौरान माँ उसका पूरा इंटरव्यू ले लेती और उसके आवागमन क्षेत्रों की समस्त भौगोलिक जानकारी इकट्ठी कर लेती थीं ।स्मरण शक्ति तो उनकी अद्भुत थी । सब कुछ याद रहता था उन्हें ।सुबह से शाम तक समस्त उत्तरदायित्वों को निभाते हुए भी वह घर के सामने से हर गुजरने वालों पर निगाह रखतीं, सबको पानी पूंछती और फिर सबसे एक आत्मीयता जोड़ लेती। वह कभी भी घर से बाहर कहीं नहीं गयी ।लेकिन पूरे शहर की सबसे अधिक भौगोलिक जानकारी मेरी माँ के पास ही थी । वह हर भूले भटके को इतना सटीक पता बताती कि लगभग हर कोई आश्चर्य करता।

हम तीनो भाई बहन अपनी माँ को जगत माता कहकर चिढ़ाया करते थे । मैं तो आज भी उन्हें जगत माता ही समझती हूँ ।उनकी अनुपस्थिति पूरे मुहल्ले को खलती थी । क्योंकि वह सबके दुख दर्द में सम्मिलित रहती थीं ।माँ की रसोई भी लगभग राज रसोई थी , जिसमें सबके लिए हर समय खाना उपलब्ध था ।

वह इतने प्यार से सबको खाना पूंछती कि पेट भरा होने पर भी खाने को मन करता । पड़ोस में किसी कुत्ते के भी बच्चे होते, तो उसकी १५/२० दिन तक की तीमारदारी माँ अपने सर ओढ़ लेती ।उसके लिए एक छोटा सा ईंटो का घर बनाती । घर के पुराने कपड़ो से बिस्तर बनाती और फिर प्रतिदिन नियमित समय पर उसके लिए अरहर की दाल का पानी तैयार करती । उसके भी पूरे खाने की व्यवस्था देखती। कमाल की बात थी कि उनके किसी भी कार्य में मेरे पिता जी कभी भी दखलंदाजी नहीं करते ।

माँ हमारे लिए सबसे अच्छी शिक्षिका थी ।मैं रात के एक बजे तक पढ़ती तो वह बराबर मेरे बगल में बैठी रहती । कभी जरा सा भी हिलती तो तुरंत पूंछती कि क्या चाहिए । कई बार तमाम तरह की बातों पर मेरा मनोबल टूटा, तब मैं उनके सामने रो देती ।ऐसे में मुझे समझाने के लिए वह सबसे अच्छे उदहारण रखती ।आज जबकि मैं स्वयं एक शिक्षिका हूँ । बच्चो को समझाते वक़्त माँ याद आ जाती हैं । आज मैं जानती हूँ कि माँ कोई ऐतिहासिक पात्र नहीं थी। न ही किसी साहित्यिक पात्र से उनका नाता था । पर यह सबसे अच्छा साहित्य था जिसे मैने अपनी माँ से सीखा।

ममता देवी
प्रवक्ता -अंग्रेजी
राजकीय बालिका इंटर कालेज चुन्नीगंज

राजाकांता का पन्ना

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटसएप करें

ग़ज़ल

राजकांता राज,
पटना ,बिहार ,

ना लागे मेरा दिल तुम बिन
है जीना अब मुश्किल तुम बिन

हर पल मैं तेरी यादों में
मरती हूँ तिल तिल कर तुम बिन

सज धज कर बैठी हूँ कब से
चुनरी न हुई धूमिल तुम बिन

सब कलियाँ खिलने को आतुर
कैसे खिल जाऊं मैं तुम बिन

रातें गुमसुम बीतें मेरी
दिन लगता है बोझिल तुम बिन

मुश्किल होगा पाना मंजिल
ना होगा कुछ हासिल तुम बिन

इस रंग भरी महफ़िल में भी
"कांता" न हुई शामिल तुम बिन

ना लागे मेरा दिल तुम बिन
है जीना अब मुश्किल तुम बिन

तेरी यादों में मैं हर पल
मरती हूँ तिल तिल तुम बिन

सज धज कर बैठी हूँ कब से
चुनरी हुई ना धूमिल तुम बिन

सब कलियाँ खिलने को है
मैं कैसे जाऊं खिल तुम बिन

बीती तन्हा में अब रातें
दिन लगता है बोझिल तुम बिन

मुश्किल होगा पाना मंजिल
ना होगा कुछ हासिल तुम बिन

इस रंग भरे महफिल में अब
"कांता"कैसे शामिल तुम बिन

वाह! रे! बंशीधर

बंशीलाल जितना सरल स्वभाव के थे, उनकी पत्नी उतना ही कर्कश और झगड़ालू मिजाज की थी। बंशीलाल अध्यात्मिक थे,वे रोज सत्संग सुनते तो पत्नी रोज गाली देती और झगड़ा करती।बंशीलाल जो बोलते ठीक उसके उल्टा काम करती।बंशीलाल बोलते आज खाना नही बनेगा उस दिन खाना बनाती, और बोलते आज खाना बनेगा उस दिन नहीं बनाती ।

बंशीलाल को खाना पर साधु समाज़ को बुलाना था,वो सोच में पड़ गये की पत्नी सुनेगी तो गाली देगी क्या करें। वो पत्नी से बोले सुनती हो आज मेरा खाना नही बनेगा किसी और के यहां खाने पर जाएंगे,तो पत्नी बोली ठीक है ।पत्नी खुश होकर खाना बनाई कि आज उनको नही खाना है ,तब तक बंशीलाल ने साधु समाज को खाने पर बुला लिए और खाना खिलाने लगे । जब पत्नी ने देखा कि ये साधु संत लोग खाना खा रहे है तो अपना गाली देना शुरु की।"गाय खाऊ, सूअर खाऊ,डांगर खाऊ नतिया"।

इतना सुनते ही साधु लोग उठ कर खड़े हो गए,बोले हम लोग नहीं खायेंगे तो बंशीलाल बोले बाबा ये अपने भाषा में बोल रही है कि"गा के खाईये सूर में गाईये डमरू बजा के खाईये और नाचिये" तब साधु समाज़ खाना खा के साधुवाद दिये और चले गए ।

राजकांता राज,
पटना ,बिहार ,

संस्मरण

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटस्एप करें

माँ भूल नहीं पाता

मैं अपनी माँ श्रीमती दयावती श्रीवास्तव के साथ जब भी कहीं जाता तो मैं तब आश्चर्य चकित रह जाता , जब मैं देखता कि अचानक ही कोई युवती , कभी कोई प्रौढ़ा ,कोई सुस्संकृत पुरुष आकर श्रद्धा से उनके चरणस्पर्श करता है .मैम, आपने मुझे पहचाना ? आपने मुझे फलां फलां जगह , अमुक तमुक साल में पढ़ाया था? प्रायः महिलाओ में उम्र के साथ हुये व्यापक शारीरिक परिवर्तन के चलते माँ अपनी शिष्या को पहचान नहीं पाती थी , पर वह महिला बताती कि कैसे उसके जीवन में यादगार परिवर्तन माँ के कठोर अनुशासन अथवा उच्च गुणवत्ता की सलाह या श्रेष्ठ शिक्षा के कारण हुआ। वे लोग पुरानी यादों में खो जाते। ऐसे एक नहीं अनेक संस्मरण मेरे सामने घटे हैं .कभी किसी कार्यालय में किसी काम से जब मैं उन के साथ गया तो अचानक ही कोई अपरिचित आता और कहता , आप बैठिये , मैं काम करवा कर लाता हूँ वह उनका शिष्य होता।

१९५१में जब मण्डला जैसे छोटे स्थान में मम्मी का विवाह हुआ माँ लखनऊ की थीं। पढ़ी लिखी बहू मण्डला आई तो , दादी बताती थी कि मण्डला में लोगो के लिये इतनी दूर शादी , वह भी पढ़ी लिखी लड़की से ,यह एक किंचित अचरज की बात थी .उपर से जब जल्दी ही मम्मी पापा ने विवाह के बाद भी अपनी उच्च शिक्षा जारी रखी तब तो यह रिश्तेदारो के लिये भी बहुत सरलता से पचने जैसी बात नहीं थी . फिर अगला बमबार्डमेंट तब हुआ जब माँ ने शिक्षा विभाग में नौकरी शुरू की . हमारे घर को एतिहासिक महत्व के कारण महलात कहा जाता है , "महलात" की बहू को मोहल्ले की महिलाये आश्चर्य से देखती थीं . उन दिनों स्त्री शिक्षा , नारी मुक्ति की दशा की समाज में विशेष रूप से मण्डला जैसे छोटे स्थानो में कोई कल्पना की जा सकती है . यह सब असहज था।

अनेकानेक सामाजिक , पारिवारिक , तथा आर्थिक संघर्षों के साथ माँ व पिताजी ने मिसाल कायम करते हुये नागपुर विश्वविद्यालय से पोस्ट ग्रेज्युएशन तक की पढ़ाई स्व अध्याय से प्राइवेट परीक्षार्थी के रूप में साथ साथ बेहतरीन अंको के साथ पास की . तब सीपी एण्ड बरार राज्य था , वहाँ हिन्दी शिक्षक के रूप में नौकरी करते हुये , घर पर छोटे भाईयों की शिक्षा के लिये रुपये भैजते हुये , स्वयं पढ़ना , व अपना घर चलाना , तब तक मेरी बड़ी बहन का जन्म भी हो चुका था , सचमुच मम्मी पापा की परस्पर समर्पण , प्यार व कुछ कर दिखाने की इच्छा शक्ति , ढ़ृड़ निश्चय का ही परिणाम था।

मां बताती थी कि एक बार विश्वविद्यालय की परीक्षा फीस भरने के लिये उन्होंने व पापा ने तीन रातो में लगातार जागकर संस्कृत की हाईस्कूल की टैक्सट बुक की गाईड लिखी थी, प्रकाशक से मिली राशि से फीस भरी गई थी ...सोचता हूँ इतनी जिजिविषा हममें क्यों नहीं ... प्रांतीय शिक्षण महाविद्यालय तत्कालीन पीएसएम से , साथ साथ बी.टी का प्रशिक्षण फिर म.प्र. लोक सेवा आयोग से चयन के बाद म.प्र. शिक्षा विभाग में व्याख्याता के रूप में नौकरी ....मम्मी पापा की जिंदगी जैसे किसी उपन्यास के पन्ने हैं .... अनेक प्रेरक संघर्षपूर्ण , कारुणिक प्रसंगों की चर्चा वे करते हैं , "गाड हैल्पस दोज हू हैल्प देम सेल्फ".आत्मप्रवंचना से कोसो दूर , कट्टरता तक अपने उसूलों के पक्के , सतत स्वाध्याय में निरत वे सैल्फमेड हैं ।

जीवन में जितने व्यैक्तिक व सामाजिक परिवर्तन मां पिताजी ने देखे अनुभव किये हैं , बिरलों को ही नसीब होते हैं . उन्होंने आजादी का आंदोलन जिया है . लालटेन से बिजली का बसंत देखा है , हरकारे से इंटरनेट से चैटिग के संवाद युग परिवर्तन के वे गवाह हैं। शिक्षा के व्यवसायीकरण की विडम्बना , समाज में नैतिक मूल्यों का व्यापक ह्रास , भौतिकवाद , पाश्चात्य अंधानुकरण यह सब भी किंकर्तव्यविमूढ़ होकर देखना उनकी पीढ़ी की विवशता है जिस पर उनका क्षोभ स्वाभाविक ही है।

तमाम कठिनाईयों के बाद भी न केवल मम्मी पापा ने अपना स्वयं का जीवन आदर्श बनाया वरन हमारे लिये एक उर्वरा पृष्ठभूमि तैयार कर दी . हमारे लिये ही क्या, जो भी उनके संपर्क में आता गया छात्रो के रूप में , परिवार में या समाज में ,सबको उन्होंने एक आदर्श राह बतलाई है . आज भी हमारे बच्चो के लिये पिताजी प्रेरक दिशादर्शक हैं . हमारे परिवार की आज की सुदृढ़ता के पीछे माँ का जीवन पर्यंत संघर्ष है . स्वयं नौकरी करते हुये अनेक बार पिताजी का अंयत्र स्थानातरण हो जाने पर मुझे , मेरी दीदी तथा दो छोटी बहनों को सुशिक्षित करना माँ की असाधरण तपस्या का ही प्रतिफल है .मुझे लगता है कि कितने पुष्प प्रफुल्लित होते देख न हम जिनको पाते .... माता के रूप में भी एक आदर्श शिक्षक की भूमिका का निरंतर निर्वहन मम्मी ने किया है .

विवेक रंजन श्रीवास्तव 'विनम्र'
विद्युत मण्डल कालोनी , रामपुर , जबलपुर
9425806252

संस्मरण

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

बेटा तुम्हें मेरी कसम

बात 1986 की है। दिल्ली के कृषि मंत्रालय में मेरी नयी-नयी नौकरी लगी थी। अच्छी नौकरी और तनख्वाह के बावजूद शुरू के 4-6 महीने गृहस्थी आदि ज़माने के चक्कर में सारी तनख्वाह महीना बीतने से पहले ही चट हो जाती थी।

दिल्ली की आबो हवा, होटल का खाना-पीना और अ-सामाजिक परिस्थितियों ने अचानक मुझे अत्यंत बीमार और कमज़ोर भी कर दिया था। पिता जी रिटायर हो चुके थे, और घर की अपनी तमाम ज़िम्मेदारियाँ उन पर थे , अतः मैने इस बात का ज़िक्र घर में किसी से नहीं किया था। लेकिन किसी तरह से मेरी बीमारी की खबर झाँसी में माँ तक पहुंची तो वह मेरी छोटी बहनो के साथ महीने के अंतिम सप्ताह में ही सीधे दिल्ली आ धमकी थी। हालांकि उन दिनों माँ की तबियत भी कुछ ठीक नहीं रहती थी, लेकिन मेरी बीमारी के आगे उन्हें अपनी कहाँ चिंता थी।

इधर उनके अचानक आ टपकने से मैं परेशान हो उठा था। एक तो वैसे ही पैसे-रुपयों की तंगी, फिर बीमारी और छोटा सा फ्लैट ऊपर से माँ आदि के आ जाने से मेरी हालत और खराब हो गयी थी। किसी तरह से एक हफ्ते ही बीते होंगे कि महीने-दो-महीने का प्लान बनाकर आयी माँ, मेरे कुछ स्वस्थ होते ही अचानक घर जाने की ज़िद करने लगी।

माँ की इस ज़िद पर मैं भीतर ही भीतर बहुत खुश भी था। बे-मन से रोकने की औपचारिकता निभाकर मैं अन्ततः उन्हें उस दिन झाँसी की ट्रेन में बिठालकर बेहद खुश था। उन्हें छोड़कर घर आया तो सिर दर्द से फटा जा रहा था। चाय पीने का मन हुआ तो मैं सीधे किचेन में जाकर चाय बनाने लगा । चाय में चीनी डालने के लिए मैंने जब चीनी का डिब्बा खोला तो उसमें कुछ रुपये देखकर मैं दंग रह गया था। उसी डिब्बे में माँ के हाथ की लिखी एक चिट भी थी, जिसमें बस इतना ही लिखा हुआ था, 'बेटे, तुम्हें मेरी कसम... इसे रख लेना, और ठीक से रहना, खाना-पीना व अपना इलाज़ कराना। फिक्र न करना, और रुपयों की ज़रूरत पड़े तो संकोच न करना, मांग लेना....।'

हालांकि तंगी के बावजूद माँ आदि को मैने अपनी उस वक्त की हालत के बारे में कुछ भी भनक नहीं लगने दी थी, लेकिन माँ को मेरी उस समय की परिस्थितियों के बारे में कैसे पता चला, और यह भी कि ऐसे में उनके अचानक इस तरह से आ जाने से मैं कुछ परेशान भी था(यह आज 32-33 वर्ष बाद भी मेरी समझ से परे रहा है...

किशोर श्रीवास्तव,
पूर्व केंद्र सरकार प्रथम श्रेणी अधिकारी /संपादक/कलाकार
ग्रेटर नोएडा

संस्मरण

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटस्एप करें

कैसे भूला दूँ

मां

तुम्हें कोटिश प्रणाम

तुम को कैसे भूला दूं जो हर बात में तुम हो आज ही तुम्हें क्यों याद करूं। तुम रहती हो मेरे हृदय के अंदर मां तुम कभी स्कूल नहीं गई।तब भी तेरे अंदर गीता रामायण का सार था, मां जब तुम विवाह कर अपने ससुराल आई तेरी उम्र थी चौदह साल थी लेकिन तुमने सब की इतनी सेवा की पति,देवर ससुर,चाचा ससुर, चाची सास।सब के लिए तुम देवी का रुप बनकर आई। वहां कोई भी महिला नहीं थी।वो लोग खुद ही भोजन बनाते थे लेकिन तुमने आकर सबको सम्भाल लिया ,तन-मन से सबकी सेवा कर सबका दिल जीत लिया था , इतनी छोटी सी उम्र में।समय से पहले ही तुम बड़ी बन गई थी। मगर जब चाचा ससुर,देवर की शादी कि तब तेरा मान सम्मान परिवार में बहुत बढ़ गया था।चार पीढ़िया को एक साथ रखना कोई तुमसे सीखें।सबको प्यार देना यहां तक कि अपने गहने भी देवरानी चाची सास और उसके बेटे की शादी में देना , मां तुमने एक बार भी मना नहीं किया क्योंकि तेरे मात-पिता के संस्कार थे।

मां जब तुम पांच साल की थी तब ही तेरे मात-पिता ने संसार छोड़ दिया था तेरी ताई जी और भूवा ने पाल-पोस कर बड़ा किया तेरा विवाह किया था तेरी ताई को हम नानी समझते थे बहुत वर्षों बाद पता चला कि वो तेरी मां नहीं थी , मगर मां से बढ़कर थी मां तुम इतने सम्पन्न परिवार से थी और इकलौती लड़की थी पूरे चौधरी परिवार में तीस साल तक किसी भी लड़की का जन्म नहीं हुआ था। और सबकी लाडली थी और इधर ससुराल में सत्रह वर्ष की हुई सबकी सास बन गई थी सबका खुब आदर सम्मान मिलता था। तब ही तेरे पास इतने अच्छे संस्कार थे जो तुमने अपने बच्चों से भी ज्यादा देवर , चाचा ससुर के बच्चों को प्यार दिया। चार पीढ़ी एक साथ रहना सामान्य बात नहीं होती है।

घर परिवार के लोगों का भी खूब साथ मिलता था। अब जब पौत्र हुआ तब चार साल का तब सब को मेरे पिता जी ने सबको जमीन , पैसे देकर अलग बैठाया और जो घाटा था उसको मेरे पिताजी ने भर कर फिर अपने बच्चों को पढ़ाया लिखाया और बच्चों की शादी की। मेरी मां का साथ उन्हें बहुत मीला था।आज भी मेरी मां को सब रंगिया, गोरेश्वर, गौहाटी के क्याल परिवार की मां थी कहते है। मेरी मां के कंठ में मां सरस्वती का वास था और हाथों में लक्ष्मी का वास था।

मेरी मां के चरणों में कोटिश प्रणाम करते हुए विराम देती हूं।

ममता गिनोड़िया मुग्धा
जोराहाट, आसाम

कविता

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

तुम छुपी रुस्तम हो माँ

माँ तुम
छुपी रुस्तम हो
बहुत कुछ
बच्चों से छुपाती हो
अपनी मुस्कान के पीछे
तकलीफें छुपाती हो
मन उदास जो हो मेरा
हंसा कर मुझे अपनी
उदासी छुपाती हो
खाना पड़ जाए
कम जो कभी
प्यार से निवाला
मुझे खिलाकर
अपनी भूख
छुपाती हो
जाने कौन सा
कुबेर का खज़ाना
है तुम्हारे पास
लुटाती हो
मुझ पर सबकुछ
तसल्ली देकर खुद को
घर के सारे
अभाव छुपाती हो
भाग-भाग कर
मिल्खा सह बन
जाती हो
काम सारा
निपटाती हो घर का
मुस्कान धरती हो
चेहरे पर
अपनी सारी
थकावट छुपाती हो
वात्सल्य तुम्हारे हर
भाव में माँ
मेरी गलती पर
जब डांटती हो मुझे
दिल के किसी
कोने में
अपार स्नेह छुपाती हो माँ
तुम सच में छुपी रुस्तम हो
माँ...

सविता दास सवि
तेज़पुर,असम

तुम बिन

नहीं है कोई सहारा तुम बिन ।
नहीं है गुजारा तुम बिन ।।
तुम्हारा जीवन मे क्या महत्व ।
ये बताने में शब्द भी निःशब्द है ।।
किससे कहें मन की बातें तुम बिन ।
नहीं लगता जी हमारा तुम बिन ।।
कैसे जीते हैं हम तुम बिन ।
न कटती हैं विरहा की रातें तुम बिन ।।
वसंत की ऋतु बैरिन भई तुम बिन ।
मेरा दिल हर पल उदास तुम बिन ।।
भीड़ बीच मे हूँ मै अकेला तुम बिन ।
न कोई उम्मीद न कोई आशा तुम बिन ।।

डा. आशुतोष
(हिंदी प्राध्यापिका)
राजकीय महाविद्यालय
जाटौली,हेलीमंडी,
गुरुग्राम, हरियाणा

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

संवेदना है, भावना है, तो कभी आश्वास है माँ,
जीवन के फूलों में तो खुशबू का सदा आभास है माँ।

शुभकामनाओं की लड़ी आशीषों की खुद ठाँव है माँ,
होती किसी भी मुश्किल के हल का सदा आश्वास है माँ।

चरणों में माँ के जन्नत है आनंद की किलकारी है माँ,
है तोहफा अनमोल प्रभु का जग को, खासमखास है माँ।

इक माँ ही होती दीपक जीवन में किसी के भी हमेशा,
आस्था है सबकी, आशा है सबकी, अटल विश्वास है माँ।

माँ के बिना इस सृष्टि की तो कल्पना ही है अधूरी,
सबसे अलग सबसे जुदा सबसे सही में खास है माँ।

माँ का कभी भी को भी पर्याय जीवन में नही है,
माँ त्याग है तपस्या है सेवा का गजब अहसास है माँ।

खुद भूखे प्यासे रह के माँ बच्चे की करती इच्छा पूरी,
है वो "पुकार" खुशनसीब खुद अपनी जिनके पास है माँ।

राम पुकार सिंह " पुकार"
गाजीपुरी

पहले जैसा प्रेम

रिश्तें की चूल्ह, हंसी मजाक आज अशिक्षा की निशानी बन चुका है।शिक्षित व्यक्ति जहां समाज की अनमोल धरोहर होता है। चाहे वह औरत हो या मर्द शिक्षा तो सभी को अपना ज्ञान समान रूप से बांटती है। यह तो हम ही नादान हैं जो रिश्तो का नाम देकर इसे अलग कर देते हैं और कहते हैं शिक्षित व्यक्ति तो समझदार होता है उसकी समझदारी का इतना ढिंढोरा पीटा जाता है की वह हंसी मजाक और ठिठोली को अशिक्षा की निशानी मान लेता है।

वह अच्छे बुरे का फर्क करना जानता है मगर जब चुगली निंदा की बात आती है तो कहां चला जाता है हमारा शिक्षित कहलाना। कुछ लोगों को तो अपनी जुबान पर नियंत्रण करना नहीं आता जब जी आया कर दी निंदा ना बड़े छोटे का लिहाज ना शिक्षित होने की समझ हमारी इन्हीं आदतों के कारण आज हमारे रिश्तो में दूरियां बढ़ती जा रही हैं और कमाल की बात तो यह है की इंसान अपने खून के रिश्तो के साथ ही ऐसा करता है उसकी नफरत सिर्फ अपनों के लिए ही होती है आसान शब्दों में कहूं तो "वह अपनों को इग्नोर करता है और दूसरों को इंप्रेस" उसे पड़ोसी से कोई लेना देना नहीं बस उसकी जद्दोजहद अपनों को तकलीफ कैसे दें उनको आहत कैसे करें उसमें लगी रहती है प्रेम, मजाक चूल्ह जैसे इसी कड़वाहट में कहीं खोकर रह जाते हैं।

पहले संयुक्त परिवार में सभी मिलकर खाना खाते ,अपनी दिनचर्या की बातें साझा करते हंसते बोलते थे पर अब उसकी जगह कानाफूसी व आर्थिक जरूरतों ने ले ली है अब ना तो भाई भाई मैं वो प्यार और स्नेह रहा ना बड़े छोटे का लिहाज अब तो हर इंसान सिर्फ अपने लिए सोचता है शिक्षित होते हुए भी आज हम अपनी शिक्षा को जिंदगी के हर फलसफे पर शर्मिंदा करते हैं और फिर शिक्षित होने का ढोंग रचाते हैं।

आज हम हंसी ठिठोली कर भी लेंगे और फिर इधर-उधर देखेंगे की कहीं हमें कोई देख सुन तो नहीं रहा। क्या कहेगा वह हमारे लिए कि हम शिक्षित होकर भी ऐसा करते हैं शिक्षा को हमने अपने निजी फायदे का जरिया बना लिया है हम कब समझेंगे की हंसी मजाक प्रेम प्यार यह सब हमारे जीवन का हमारे शिक्षित होने का एक अभिन्न अंग है।

शिल्पा अरोड़ा
विदिशा मध्य प्रदेश

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

परिंदा

मैं एक परिंदा हूं ।
जहां है जिस हाल में है
मैं एक परिंदा हूं।
मेरे जो अपने थे
पता नहीं सब कहां खो गए थे।
मैं हमेशा उन्हें ढूंढती रहती
परंतु वह परिंदा अब कहां।
मैं जब बादलों में देखा ।
पानी के लिए तरसा ।
कड़ी धूप में भटक रहा।
पता नहीं ढूँढू कहाँ
मैं एक परिंदा हूं ।
आकाश में पंछी हवा में
उड़ते देखा।
जिसने मुझे उड़ना सिखाया ।
उसने अपनी गोद में सुलाया ।
मेरी परछा तलाशने लगी।
उसी ने आज तूफान उठाया ।
अपने घर को ताक रहा था।
मकान में झुठी ममता से भरमाया।
सहसा एक परिंदा हूं।
परिंदे पंख कभी शान थे मेरे ।
उस पर कभी था मेरा हम।
उसे देख भरता दम ।
एक-एक करके सब टूट गए।
समय के साथ मैं हारा।
कल की आस में बेसहारा ।
सदियों से मैं कुचल गया।
आज अपना घमंड
बिखरते देख रहा था ।
चंद बची सांसों को गिनता रहा।
देखता घुरता एक परिंदा हूं ।
मैं एक परिंदा हूं।

वी अरूणा
कोलकाता।
9830924387

जिंदादिली

जिंदगी जिंदादिली का नाम है । हास्य और सकारात्मकता हमारे मन को स्वस्थ रखता है । जब हम मन से स्वस्थ होते हैं तो हमारा तन भी स्वतः ही स्वस्थ रहता है । पहले के लोगों में सकारात्मकता अधिक था । पहले की अपेक्षा आजकल की हमारी जीवन शैली में बहुत परिवर्तन हो चुका है ।

हमारा रहन-सहन, हमारी शिक्षा प्रणाली, आरक्षण इत्यादि हमारे जीवन को प्रभावित करता है । समयानुसार हमारी जरूरतें भी बहुत बदल गई है । अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए हम सभी को परिश्रम के साथ-साथ जद्दोजहद करनी पड़ती है क्योंकि हर क्षेत्र में प्रतियोगिता है । जहाँ आरक्षण भी अपना पैर जमाया हुआ है । जीतोड़ मेहनत के बावजूद नाकामयाबी, फिर तनाव और अवसाद । ऐसे में व्यक्ति हास्य कहाँ से लाएगा ? जब अंदर खुशी नहीं तो लेखन में हास्य कैसे संभव है ? इतना ही नहीं टी.वी., मोबाइल, विडिओ गेम, आदि से भी नकारात्मकता ही आती है ।

समाज से दूरी , जीवनयापन के लिए परिवार से दूर रहना व्यक्ति को अपने में समेटता जा रहा है । अब दोस्त भी पहले की तरह रहे नहीं । आजकल हम हर काम तनाव में ही करते हैं ।जब हम खुलकर हंस ही नहीं पाते हैं । तो हास्य लेखन कैसे कर पाएंगे ।

यही वजह है कि हम दुःख, दर्द और खुशी भी लिख लेते हैं लेकिन स्वस्थ हास्य नहीं लिख पाते हैं । जबकि हास्य हमें स्वस्थ रखने में अहम् भूमिका निभाती है । इसलिए हमें स्वयं को हमेशा नकारात्मकता से दूर रखकर सकारात्मक रखने की कोशिश करना चाहिए। क्योंकि एक स्वस्थ मन ही स्वस्थ विचार उत्पन्न करता है और स्वस्थ विचार ही स्वस्थ रचना का सृजन कर सकता है ।

पूनम झा
कोटा,राजस्थान

कविता

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

मुद्दे

श्मशान की धूंधूं के बीच
अखबार पटे रहे
बलात्कार
हत्या और
गुरबत की
ताजा- तरीन खबरों से
राजा और युवराज
चाय की चुस्कियों के साथ
पीते रहे
और महसूस करते रहे
अपने आपको
तरोताजाद्य

हर शख्स
अपनी जुराब पर
पर्फ्यूम स्प्रेकर
बदबू पर
डालता रहा
परदाद्य

मुद्दे से
ध्यान भटकाने की
दलील पर
अनवरत
सर-संधान जारी रहा
चहुँ ओर द्य

एक बात
समझ से परे रही
क्या मृत्यु भी
को मुद्दा हो सकती है?
इन गलबजवन को
कौन समझाए?

मुद्दा तो
जीवन और मृत्यु
दो छोरों के बीच अटका
पतंग-सा फड़फड़ा रहा है
मुद्दे तो होते हैं शुरू
जीवन की
सुगबुगाहट के साथ ही
रोटी और बेटी के
जो मृत्यु पर
अनंत में विलीन हो जाते हैं
अनुत्तरितद्य

इस समय
सांझा चूल्हा धधक रहा है
हवाएं हैं अनुकूल
ईंधन की भी नह है
मारामारी
हथपुइए दक्ष
कलाकारों को आदेश दो

जितनी ज्यादा से ज्यादा
सेंक सके
सेंक लें रोटियां द्य

डॉ.ज्योति मिश्रा
बिलासपुर

लेख

संघर्ष के बाद सफलता

संघर्ष! यह एक ऐसा अनुभव है जिससे शायद ही दुनिया का कोई व्यक्ति वंचित हो। हमें बचपन से सिखाया जाता हैं कुछ भी पाने के लिए संघर्ष करना ही पड़ता है।और इस संघर्ष रूपी जीवन
जिसका प्रमाण हमें अपने पुरातन धर्म ग्रन्थों में मिलता है. जैसेः- रामायण में "भगवान श्री राम चन्द्र" जी का जीवन चरित्र,"श्री कृष्ण" जी का जीवन चरित्र इत्यादि!

बिना संघर्ष के कभी कुछ हासिल नहीं होता। समाज में प्रतिष्ठा, नाम-शोहरत, रुपया-पैसा, तरक्की या फिर पढ़ाई में अव्वल होना हो, चाहे जो भी लक्ष्य हो उसे प्राप्त करना बिना संघर्ष के संभव नहीं।

इस संदर्भ में भारत भूमि के इस पवित्र धरती पर जन्में विश्व प्रसिद्ध कवि और वक्ता कहते हैंः-

जब तक "राम चन्द्र" जी अयोध्या के राजा महल में रहे तब तक राजकुमार राम कहलाए, लेकिन वहीं राम चन्द्र जब बारह वर्ष अयोध्या से बाहर वनवास से संघर्ष पूर्ण जीवन व्यतीत कर के आए तो वहीं राम चन्द्र "मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम चन्द्र" कहलाए!

आज हम माता "सीता जी" को एक पूर्ण पतिव्रता स्त्री होने का प्रमाण इसी आधार पर देते हैं क्योंकि इसके पीछे भी माता जी की घोर तपस्या और अपने पति व्रत का सख्ती से पालन करना है।इसी लिए मनुष्य को जीवन में आए हुए संघर्षों से भागने की जरूरत नहीं बल्कि उनका डट कर सामना करने की आवश्यकता है।

इसमें कोई दो राय नहीं की संघर्ष जीवन को तराशता है, निखारता है, सँवारता है और फिर हमें ऐसे साँचे में गढ़ता है जिसकी प्रसिध्दि दुनिया करते नहीं थकती। शायद यही वो मुकाम होता है जिसके लिए मनुष्य अथक प्रयास करते जाता है जिसे हम संघर्ष कहते हैं। इसके पश्चात जो सफलता प्राप्त होती है निसंदेह वो अतुलनीय होती हैं। जिसके लिए कहा गया है
"संघर्ष ही सफलता की कुंजी है"
और आज हमें गर्व होना चाहिए कि हमारे देश में,और विश्व में कुछ ऐसे विश्व प्रसिद्ध पुरुष, क्रांतिकारी ,दार्शनिक ,मजुद , लेखक हैं या जो थे.. जिन्होंने मनुष्य को कामयाबी के रास्ते पर ले जाने वाले मूल मंत्रों को साझा

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटस्एप करें

किए हैं ताकि हम उन मूल मत्रों को अपना कर जीवन में कुछ अलग कर सकेंःजिसके संदर्भ में महात्मा गांधी जी का कथन है कि "जीवन में सफल सफल व्यक्ति वहीं होता है जो सत्य के मार्ग पर चलता है... - महात्मा गांधी..

संघर्ष जीवन के उतार-चढ़ाव का अनुभव कराता है, अच्छे-बुरे का ज्ञान करवाता हैं, सतत सक्रिय रहना सिखाता है, समय की कीमत सिखाता है जिससे प्रेरित होकर हम सशक्तिकरण के साथ फिर से अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित होते है और जीवन जीने के सही तरीके को सीखते हैं।

दुनिया का हर व्यक्ति जीवन में सफलता की उम्मीद करता हैं क्योंकि वो जानता है कि सफलता के बिना कुछ भी पाना मुश्किल है जिसके लिए वो अथक प्रयास भी करता है। लेकिन आज की हमारी युवा पीढ़ी संघर्ष से भागती नजर आ रही है जो की एक दिव्य भारत के निर्माण में मिल का पत्थर साबित हो सकता है..जिसके फलस्वरूप आज मुझे अत्यन्त दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि अगर..हमारे पास देश के विकाश के बारे में सोचने का समय नहीं है तो हम कम से कम अपने विकाश के बारे में तो सोच हीं सकते हैं....लेकिन इसके लिए हमारे देश की युवा पीढ़ी को सबल होने की जरूरत है,प्रबल होने की जरूरत है साथ हीं अपने लक्ष्य के को पाने के प्रति एक पागल की तरह सोच रखने की जरूरत है,और साथ में अपने अपने इष्ट के प्रति अगाध श्रद्धा रखते हुए उनका स्मरण करते रहने की आवश्यकता है..ताकि लक्ष को प्राप्त करने के मार्ग में कोई बढ़ा न आए...क्योंकि
कहा गया हैः-
जो पाना है बस उसकी एक पागल की तरह चाहत कर
करता रह कर्म मगर साथ में खुदा की इबादत भी कर।

भारतीय रचनाकारों द्वारा परिभाषित जीवन का उदेश्य और अर्थ भिन्न-भिन्न है जिसका अध्ययन करने के उपरांत ज्ञात होता है कि जीवन एक चक्र है जो दिनप्रतिदिन गुरता रहता है. अतः हमें अपने विद्वानों के अनुसार,अपने वधर्म ग्रन्थों के अनुसार और अपने वेदों के अनुसार हीं चलने की आवश्यकता है...!
हमें अपने जीवन को सफल बनाने के लिए सनातन धर्म के मार्ग पर और साथ मिलकर चलने कि अती आवश्यकता है....जिसका संकेत ऋग्वेद के इस श्लोक में मिलता हैः-
। सं गच्छध्वम् सं वदध्वम्।। (ऋग्वेद १०.१८१.२)

कई बार कुछ अलग करने की चाह और प्रबल प्रेरणा से व्यक्ति अपने मुकाम के करीब पहुँच भी जाता है लेकिन कुछ कठिन संघर्ष को सामने देख सफलता से वंचित हो जाता है। इसीलिए किसी भी क्षेत्र में सफल होने के लिए मन को एकाग्र करके मैदान में उतरें औरः-

"एक समय में एक काम करें ,और ऐसा करते समय अपनी पूरी आत्मा उसमे डाल दें और बाकी सब कुछ भूल जाएं " जो लोग इस कथन को खरे उतरते हैं उनके सपने पूरे होते हैं और जो नहीं उनके सपने अधूरे रह जाते है और जीवन के अंतिम पलों तक उनकी इच्छाएँ आधी-अधूरी रह जाती है। ऐसी इच्छाएँ उन्हें अपने जीवन से निराश करती है क्योंकि अधिकांश लोग अपने संपूर्ण जीवन में यह जान ही नहीं पाते सफलता कैसे हासिल हो।

दोस्तो! जीवन 'संघर्ष' का दूसरा नाम हैं। एक बात हमेशा याद रखिए, अपनी मंजिल का आधा रास्ता तय करने के बाद पीछे ना देखे बल्कि पूरे जुनून और विश्वास के साथ बाकी की आधी दूरी तय करे, बीच रास्ते से लौटने का कोई फायदा नहीं क्योंकि लौटने पर आपको उतनी ही दूरी तय करनी पड़ेगी जितनी दूरी तय करने पर आप लक्ष्य तक पहुँच सकते है।

जब तक जीवन में संघर्ष नहीं होता तब तक जीवन जीने के अंदाज को, सच्ची खुशी को, आनंद को, सफलता को अनुभव भी नहीं किया जा सकता। जिस तरह बिना चोट के पत्थर भी भगवान नहीं होता। ठीक उसी तरह मनुष्य का जीवन भी संघर्ष की तपिश के बिना ना तो निखर सकता है, ना शिखर तक पहुँच सकता है और ना ही मनोवांछित सफलता पा सकता है। इस बारे में मेरी अपनी राय है कि "कोई लक्ष्य मनुष्य के साहस से बड़ा नहीं, हारा वही जो लड़ा नहीं." पर उन लक्ष्यों तक पहुंचते वहीं लोग हैं जो संघर्ष करते हैं। क्योंकि "संघर्ष हमारे जीवन का सबसे बड़ा वरदान है और क्योंकि वो हमें सहनशील, संवेदनशील और देवतुल्य बनाता हैं।" संघर्ष के इस सूत्र को समझिए और उसपर चलने की कोशिश कीजिए। यकीन मानिए आप जीवन को एक अलग रूप से देखने लगेंगे। और जीवन में अगर सफल होना है तो स्वयं के प्रयासों से सफलता को प्राप्त कीजिए....!जिन लोगों को विरासत में सब कुछ मिलता है उन लोगों को भी इस विरासत को सहेज कर रखने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। विरासत बनाने के लिए किसी पीढ़ी ने तो संघर्ष किया होता है,और जी संघर्ष से भागने वाले प्राणी है वो कभी भी मनोवांछित सफलता नहीं पा सकतें है।क्योंकि "संघर्ष हमारे जीवन का सबसे बड़ा वरदान है और वो हमें सहनशील, संवेदनशील और देवतुल्य बनाता हैं।" इसलिए संघर्ष के इस सूत्र को समझिए और इसपर विचार कीजिए "इच्छाशक्ति + स्थिरता = संकल्प, संकल्प + कड़ी मेहनत (संघर्ष) = सफलता ।

इस बारे में कहल मार्क्स वादी विचारधारा कहती हैः-"एक घर बड़ा या छोटा हो सकता है; जब तक पड़ोसी घर छोटे होते हैं, तब तक यह एक निवास के लिए सभी सामाजिक लोगों को संतुष्ट करता है। लेकिन छोटे घर के एक महल के बगल में आने दें, और छोटा घर एक झोपड़ी में सिकुड़ जाता है।" मजदूरी और पूंजी (१८४७)

"निर्धारित लक्ष्य के बिना आप जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकते. यदि आपको अपनी मंजिल का ही पता नहीं होगा तो भला रास्ता कैसे तय करेंगे? स्पष्ट लक्ष्य के अभाव में आप अंजान रास्तों पर यूं ही भटकते रहेंगे. अतः क़ामयाबी पाने के लिए सबसे पहले अपना लक्ष्य निर्धारित करिए और फिर पूरी ईमानदारी और मेहनत से उसे हासिल करने में जुट जाइए...!

क्योंकि किसी मंजिल पर पहुंचने से पहले का रास्ता थकाने और हिम्मत तोड़ने वाला होता है. ऐसे में कोई भी हार कर बैठ सकता है. लेकिन जो अपने जज्बे को बनाए रखते हैं, वे जीवन में आयी सभी विषम परिस्थितियों के बावजूद भी सफल अवश्य होते हैं...।

इस विषय में नेपोलियन हिल का कथन हैः-की "जब कोई व्यक्ति अपने लक्ष्य को इतनी गहराई से चाहे कि वह उसके लिए अपना सब कुछ दांव पर लगाने के लिए तैयार हो, तो उसका जीतना सुनिशचित है." सफलता का आशीर्वाद केवल उन्हें ही मिलता है जिन्होंने कभी संघर्ष के क़दमों को स्पर्श किया हो। १- आपका संघर्ष जितना बड़ा होगा आपकी सफलता उतनी ही बड़ी होगी। २- जितनी भारी मुसीबतों की ज़ंजीरें आपके क़दमों में बंधी रहेंगी इनके उतरने पर आपकी उड़ान उतनी ऊँची होगी क्योंकि राष्ट्र पिता महात्मा गांधी जी की शुक्ती है किः- मुट्ठीभर संकल्पवान लोग जिनकी अपने लक्ष्य में दृढ़ आस्था है, इतिहास की धारा को बदल सकते हैं.

महात्मा गांधी

निर्मल कुमार दुबे
द्धहथुआ, गोपालगंज द्धबिहारऋ
संपर्क सूत्रः- 9973955896

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

बंजर खेत

घर में लाश पड़ी थी और कफ़न के पैसे नहीं थे। कोरोना के कारण सालभर से काम बंद ..किसी तरह गोलू ने दोस्तों से कफ़न का इंतज़ाम किया और अपने पिता की लाश को अग्निदेव को समर्पित किया । घर में माँ ने गोलू को गले लगा कर प्यार करते हुये बोली बेटा छोटा हो कर भी तुमने पिता का दाह संस्कार किया पर तुम्हारा बड़ा भाई सब हड़पने की जुगाड़ ही में लगा रह गया। गोलू माँ तू चिंता मत कर मैं हूँ न ..तभी "बड़के "भाई ने कहा मैंने बँटवारा करा लिया है नाले के पास के खेत मेरे और पहाड़ के पास के खेत गोलू के।

माँ बेटा वह तो खेत बंजर पड़े है तुम दोनो जगह के खेतों के आधे , आधे का बँटवारा करो , गोलू नहीं माँ भैया ने जो कर दिया है मुझे मंजूर है। माँ चिखते हुये बाप को मर कर एक दिन नहीं हुआ तूने बँटवारा कर दिया निकल मेरे घर से मत आना , वही खेत पर ही रहना ...गोलू मना करता रहा पर माँ ने उसका सामान फेंक दिया , वह भी खेत पाने के नशे में अपनी चतुराई के घंमड में चला गया ।

गोलू माँ चिंता मत कर मैं उस बंजर ज़मीन पर कल से ही काम करुँगा तुम देखना भैया से अधिक पैसा आपको दूँगा और गोलू ने उस बंजर ज़मीन को रात दिन मेहनत कर नयी तकनीक से खेती कर सबको चौंका दिया , दूर दूर गाँव में गोलू का नाम हो गया , आज उसकी मेहनत , लगन व सूझबूझ ने माँ की सीना चौड़ा कर दिया था ।

अलका पाण्डेय मुम्बई

अलका के दोहे

कोरोना भू से हटे
कर दो न कुछ उपाय ।
दूब फूल से पुज रही
दो गूथ्थ सुलझाय ।।

सुबह शाम श्री को भजे
मन बसे सिया राम ।।
सब में देख रुप हरि का
जगत परम है धाम ।।

सुमिरन करने से धुले
हम सब के ही पाप ।
धूप ,दीप ,भोग लगे
हर्षित होते आप ।।

फूलों की माला बना
तेरा करु श्रृगांर ।
तन मन से पूजा करे
नैया करना पार ।।

हे प्रभु गजानन सुन लो
मेरी विनय पुकार ।
हे प्रभु विध्न हर्ता सुनो
करना तुम उपकार ।।

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

खोने का दर्द

पता था मुझे..,
तुम लौट कर नही आयेगा
बुलंदी को छूते ही तुम
हमें भूल जायेगा..!!

ये कोई नई बात नही था
जो चला गया दूर
छोड़ कर मुझको
पता था वो लौट कर
न आएगा..!!

मुझे याद है वो
श्रावण की महीना
आधी रात में जब
तुम आया था
मेरा दरवाजे पर
तुम भीगा हुआ था ।
आंखो में आंसु
होंठ तुम्हारा कंपा कंपा था..।

सच तब मुझे पता चला
जब तुम आने का
कारण बताया था...,।
मेरा मन निर्शब्द निर्वाक था
जब तुम कहा सारे अपनों को
श्मशान में विदा कर आया।

तुम अपना घर की दरवाजा को
छू भी ना पाया था..,
शुना घर से तुम मेरा घर
रोते हुए लौट आया था..।

भूली नहीं में
तुम जी भर कर
अपना दर्द जाहिर किया था..।
सीने पर अपना सिर रख कर
खूब आंसू बहाता था..।।

अपनों को खोने का दर्द
क्या होता है ....,
पहले से मुझे था पता,
अब तुम्हे पता चला है..।
पल पल तुम्हारा
हर खुशियों की
मैं ख्याल रखा था..,
तुम्हारा हर गम पर
बात मेरा मलहम की
काम किया
करता था।
जब जाने लगे तुम परदेश
संभाल लिया था मैं
खुद ही खुद को..,
तुम्हारा लौट आने की आशा में..।
पर रो पड़ी थी उस वक्त मैं
जब तुम खत भेजना
बंद किया था..,
बस बिस्तर ही साथी
बना था मेरा...
तुम्हारा ही इंतजार में.।

भुला दिया जब तुम मुझ को
टूट कर मैं बिखर गया था..,
ख्वाब जो था..,
सुहाग में तुम्हारा..
वो सारे कफन में..
छिपा लिया था..।
बाकी जो था यादें तुम्हारा.,
आत्मा ने उसे काया के संग
आग के हवाले कर दिया था..।।

एडवोकेट सुनीता सुनु
देवघर झारखंड

कविता

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

सूरज जी आये

सूरज जी आये गर्मी लेकर ,
उससे जूझ रहा प्राणी हर ।

जब करती गर्मी अपनी मार ,
पसीने की बहने लगती धार ।

धूप लगती है तन पर ऐसी ,
मानों आग बरस रही हो जैसी ।

जलते हैं राहगीरों के पाँव ,
ढूंढते फिर वृक्षों की छाँव ।

शीतल जल के लिये तरसते ,
मिलती राहत जब मेघ बरसते ।

सूरज बड़ा ही नटखट लाल ,
बदलता रहता अपनी चाल ।

बड़ा मायूस दिखता पूस-माघ ,
जेठ-आषाढ़ में बरसाता आग ।

गमह्ण का बहुत बड़ा भण्डार ,
जून-जुला में लाता हर बार ।

गमह्ण संग मक्खी - मच्छर रोग ,
बिगड़ते इनसे बहुतों के जोग ।

सावधानी के साथ जो रहते ,
वे नह रोग - व्याधियाँ सहते

डा. सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी
ग्राम/पो.पुजार
जिला – टिहरी गढ़वाल –
मोबाइल नंबर – 9690450659

पहली कविता

आखिर क्यों?
आखिर क्यों भर आते हैं ?
आंसू... आँखों में
अनकहे ..अनचाहे
बिना किसी ... पूर्वसूचना
बिना किसी– कारण
क्यों बना देते हैं?
पंगु मुझे
क्यों कर देते हैं. .विवश
सबके. .. .समक्ष
क्यों दर्शा जाते हैं?
मुझे असहाय सा...
लकचित लजदगी से..
उदासीन

रचना पंचपाल
नेहरूग्राम ,देहरादून

कविता

रामबाण

इनके दल से निकले हैं तो
उनके दल में मिल जाते हैं।
सत्ता के दुखियारे दुरदिन,
अपनी ही कब्र बनाते हैं।

मौका पाने को दल बदलें,
कैसे उस दल में मिलना है।
किन किनको हमको चुनना है,
यह हमको ही तय करना है।
ठगे - ठगे से देख रहे हैं,
सत्ता में आते जाते हैं।

सदन ये खण्डित हो रहा है,
कुछ मतभेदी दीवारों से।
गुंजित करे कुंठित इरादे,
सदनों में कौमी नारों से।
आजादी की मांग उठाने,
किस्से बनवाये जाते हैं।

समता ममता और विसमता,
घनघोर घटा की घाटी में।
जहर इतना क्यों बो रहे हैं,
पवित्र पावन सी माटी में।
तस्कर पामर नाट्य नटी,
सब दिल से दिल मिल जाते हैं।

समदशा उनको चीन लगे,
पाक को नापाक बोलेंगे।
बोली उनकी भोली लगती,
भोले बाबा से तौलेंगे।
चुटिया काट रहे हैं बंदर,
जयकारा करते जाते हैं।

डा0 रामकुमार चतुर्वेदी
सिवनी

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

ठोकर

ठोकर लगा कर
मुस्कुराया पलभर
रास्ते का पत्थर
कुछ देर ठिठककर
दर्द से कराह कर
अश्रु पोंछकर
लेकर संगत का असर
पत्थर दिल बनकर
चल पड़ा मगर
फूल मुस्कुरा कर
फिर उसी राह पर
कोशिश अब के रही
उसकी पर बेअसर
वेदना सहकर
रास्ते का पत्थर
पूरी शब भर
रोया यूं सोचकर
फूल को क्यों कर
बना दिया पत्थर
संगति का असर
फूल बना पत्थर
पत्थर बना फूल
समझा वह अपनी भूल!
मगर फूल!!
रहा कहां फूल!!

निरुपमा त्रिवेदी , इंदौर

कहानी

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

बटंवारा

सोमरू के घर बंटवारा होने के लिए सभी भाई- बहन रिश्तेदार धीरे-धीरे घर आ गए। घर बहुत बड़ा था साथ में खुला जमीन भी था।आपस में सौहार्द पूर्ण वातावरण में घर बंटवारे का नियम बनाने के सुझाव पारित किया गया। इसके लिए अधिवक्ता एवं अभियंता अमीन के साथ बुलाया गया। दोनों के सामने घर-जमीन बंटवारे के बारे में बताया गया और यह कहां गया आप दोनों के सलाह से,आगे की कार्रवाई की जाएगी। दो-तीन दिन में अभियंता अमीन ने मिलकर घर का, बाजार मूल्य एवं जमीन का, बाजार मूल्य की जानकारी दिए। उसके बाद अधिवक्ता बंटवारे के कानून के बारे में जानकारी दिए। सभी काम बहुत सौहार्दपूर्ण में हुआ।

जिस हिस्सेदार को तुरंत पैसे की आवश्यकता थी वह खाली जगह का एक हिस्सा को पसंद किए और जो हिस्सेदार को घर से लगाव था घर मे अपने अपने हिस्से में पसंद कर लिए। अब मां बाबूजी के बारे में सोचा गया किनके के हिस्से में जाएंगे। आपस में बातचीत करने में सब लोग कनी कटा रहे थे, अंत में निर्णय हुआ की मां बाबूजी का निर्णय सर आंखों पर रखा जाएगा।दूसरे दिन सभी हिस्सेदार मां बाबूजी के कमरे में जो तीन दिन से कमरे में बंद थे वहां सभी लोग पहुंचे और यह बताएं कि हम लोग सौहार्द पूर्ण रूप से आपस में बटवारा कर लिए हैं और आप लोग अपना निर्णय दे किसके पास आप लोग रहेंगे।

पहले मां बाबूजी ने सबको शुभ-शुभ आशीर्वाद दिए कि तुम लोग आगे खूब फूलो फलो। सभी काम शांतिपूर्ण से हो गया है। अब मेरा निर्णय सुनना चाहते हो मेरी इच्छा है इसे पंचायत में इस बात को रखा जाए क्योंकि पंच परमेश्वर होते हैं इसके लिए एक समय निश्चित किया जाए घर के खाली मैदान में जश्न के माहौल बनाकर मोहल्ले के सभी लोग को निमंत्रण दिया जाए। पंच बैठकर दोनों पक्ष के लोग से सुनने के बाद उनका निर्णय सर्वोपरि ही रहेगा। इस बात पर आप लोग सहमत हैं तो इसकी कार्यवाही की जाए।सभी पटदारी इस पर सहमत होकर आगे कार्रवाई करने लगे। मैं यहां पुत्र पुत्री की जगह पर पटदारी लिख रहा हूं इसलिए कि अब वह समकक्ष हो गए हैं।

पंच बैठा सभी हिस्सेदारी की बात सुनने के बाद जब बुजुर्ग चाचा चाची की बात यानी मां -बाबूजी की बात सुनने की इच्छा जाहिर किए। मां बाबूजी बोले हमने तय किया है सभी हिस्सेदार यह तय कर ले कौन मेरे पास आकर रहेगा हम लोग इस घर और मोहल्ला को छोड़कर कही न जाएंगे मेरे पास जो लोग आएगा उन्हें कोई भी खर्च करने की आवश्यकता नहीं है और मैं समझता हूं पंचायत का भी यही निर्णय मान होगा। पंच अपना निर्णय सुनाते हुए सभी हिस्सेदार को आदेश दिए की अपना सहूलियत के हिसाब से समय निश्चित करें। बाद में सभी हिस्सेदार भी सहमत हो गए पंचनामा पर हस्ताक्षर भी कर दिए और माता पिता को अपने पुत्र पुत्री का प्यार मिलता रहा।इस लेख से यह शिक्षा मिला घर का बटवारा भी हुआ लेकिन घर टूटा नहीं प्रेम बना रहा।

विजयेन्द्र मोहन।

REDMI NOTE 8 PRO
AI QUAD CAMERA

महिला उत्थान दिवस समारोह 2021
REDMI NOTE 8 PRO

साहित्य सरोज सेवा सदन

REDMI NOTE 8 PRO

महिला उत्थान दिवस समारोह 2021
साहित्य सरोज सेवा सदन
Vivo V17 Pro
48MP AI QUAD CAMERA

REDMI NOTE 8 PRO
AI QUAD CAMERA

महिला उत्थान दिवस